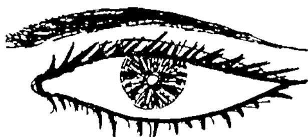
शिक्षा विभाग, राजस्थान बीकानेर

के लिए



कृष्ण जनसेवी एण्ड को, बीकानेर

निर्निमेष



सं० मेघराज मुकुल

शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर

शिक्षा विभाग राजस्थान, बीकानेर के लिए

प्रकाशक कृष्ण जनसेवी एण्ड को
दाऊजी मदिर भवन बीकानेर

सम्पादक मेघराज मुकुल

मूल्य पन्द्रह रुपये नब्बे पैसे मात्र

आवरण हरिप्रकाश त्यागी

संस्करण प्रथम, 1987

मुद्रक एस० एन० प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा दिल्ली 110032

NIRNIMESH Edited by Meghraj Mukul Price Rs 15 90

आमुख

शिक्षक—सम्मान—समारोह के अवसर पर शिक्षा विभाग के लेखक, कवि अध्यापकों की कृतियां हिन्दी संसार को सादर प्रस्तुत हैं।

ता॰ प्र॰ जोशी

(तारा प्रकाश जोशी)
निदेशक, प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

शिक्षक दिवस प्रकाशन : परिचय

शिक्षक शिक्षण काय क लिए तो प्रतिबद्ध हैं ही, पर उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के अनेक आयाम और भी हैं। इसी को मद्देनजर रख कर राजस्थान क शिक्षा विभाग ने राजस्थान के सजनशील शिक्षक लेखको की साहित्यिक प्रतिभा का प्रोत्साहन दन और उजागर करन हेतु वष 1967 म एक योजना तयार की। योजना के तहत शिक्षक दिवस (5 सितम्बर) के अवसर पर सजनशील शिक्षक लेखको की रचनाओ क सकलन प्रकाशित करन का काय हाथ म लिया गया। 1973 तक इस योजना के अन्तगत विविध विधाओ के 31 सकलन प्रकाशित किय गये। रचनाओ के चयन सपादन का काय निदेशालय का प्रकाशन अनुभाग करता था। चहुओर से योजना को प्रोत्साहन मिलने पर चयन सपादन का काय भारतीय ख्याति के विधा क ममज्ञ लेखको से करवाकर योजना को एक नया रूप दिया गया। 1974 स अब तक 70 विविध विधाओ के सकलन प्रकाशित हो चुके हैं। इस तरह प्रकाशित सकलनो की कुल सख्या 101 हो गई है।

इस योजना द्वारा प्रोत्साहन पाकर राजस्थान के कई सजनशील शिक्षक लेखको को आज भारतीय स्तर पर प्रकाशन स्थान प्राप्त हो रहा है। अन्य राज्यो के शिक्षा विभागो व भारतीय ख्याति की पत्रिकाओ ने योजना के अन्तगत प्रकाशित सकलनो की सराहना की है।

वष 1987 क सकलन और सम्पादक निम्नलिखित हैं—

(1) बीच का आदमी तथा अन्य कहानिया (कहानी सकलन) स० शानी। (2) मातिया का थाल (बाल साहित्य) स० मनोहर वमा (3) मिरजण री सौरम (राजस्थानी विविधा) स० नन्द भारद्वाज (4) माटी की सुवास (हिन्दी विविधा) स० सावित्री डागा (5) निनिमष (कविता सकलन) स० मधराज मुकुल।

अध्यापक और कविता

शिक्षक दिवस का हरवप आना, देश म एक जीते जागते सास्कृतिक आदो लन का बार-बार स्मरण है। वह राजनीति के पचडे से बहुत दूर होत हुए भी अब दयनीय बनता जा रहा है। आज भी शिक्षक यही सोचता है कि वह मुक्त नही है। उसे मस्तिष्क की स्वाधीनता प्राप्त नही है। रोम्या रोला ने ठीक ही कहा है —

"जो कोइ मानव समाज के भविष्य के लिए युद्ध करना चाहता है, उस राजनैतिक क्षेत्र मे युद्ध करना चाहिए, पर अपन मस्तिष्क की स्वाधीनता को किसी भी हालत म नही छोडना चाहिए, क्याकि मानसिक स्वाधीनता ही उसे युद्ध क्षेत्र मे हावी बनाए रखेगी।"

आज के युग म शिक्षक दयनीय और तिरस्कृत न हो। उसे भर पट रोटी मिले। वह मानसिक दासता का शिकार न हो। इसीलिए शायद उस कविता लिखने के रूप म कुछ मानसिक स्वाधीनता दी जाती है। इसका प्रमाण यह काव्य सकलन है। दबी जबान मे ही सही वह अपनी मानसिक-पीडाओ को अनेक प्रकार से आवरण म लपेट कर भी, शालीनता और सलीके से अदम्य अनुभूतियो को व्यक्त कर गया है।

कविराज विश्वनाथ ने रस शास्त्र म वर्णित काव्य रस के स्वरूप का सार इस प्रकार अकित किया है —

सत्वोद्रेकादखण्ड स्वप्रकाशानन्द चिन्मय ।
वेदान्तर स्पश शून्यो ब्रह्मास्वाद सहोदर. ॥
लोकोत्तरचमत्कारप्राणा कैश्चित्प्रमातृभि ।
स्वाकारवदभिन्नत्व नायमास्वाद्यत रस ॥

(साहित्य दपण, ततीय परिच्छेद)

रसास्यत इति रस । जिसका आस्वादन हो, वह रस है । इस संकलन में अधि काश कविताओं में सत्व का उद्रेक है । उनका आस्वाद अनिवार्यतः आनन्दमय है । विशेष बात कविताओं में व्यक्त अखण्ड चेतना है । इसमें अनुभव की पीड़ा है, प्रति संवेदन है और ऐसी दग्ध-उत्पीड़न की व्यथा है, जो साधारणतः गुरु आम शिष्य द्वारा नहीं कही जाती । व परोक्ष रूप से यही प्रश्न करते हैं कि सम्मान की भाषा में उनके मनस्व का स्वीकारा ही कब गया ?

फिर भी उनकी कविताओं को नकारना तो अकृतज्ञता होगी । उनकी काव्यानुभूतियों का आनन्द प्रत्यगत ब्रह्म आनन्द नहीं है । लेकिन व आत्मनिषेध की परिचायक भी नहीं हैं । कहीं कहीं अस्पष्ट असंगतियाँ और भ्रान्तियाँ भी हैं जो उनकी प्रौढ़ विचारधारा के प्रवाह को रोकती है ।

समय और परिवेश से प्रभावित आज की कविता को नवीनता की चाशनी में डुबाकर उसकी विषयवस्तु और शिल्प दोनों को नितान्त विलग बताते हुए, यह कहा जाता है कि युगबोध सौन्दर्यबोध अस्तित्वबोध और यथार्थबोध का स्पर्श उसी ही सर्वाधिक मुखर है, और केवल ऐसी ही कविता मानवीय मूल्यों को युगीन सदर्भों से जोड़ पाई है । शिल्पिक दृष्टि से भी केवल अर्थलय के प्रतिमानों की संवाहक यही कविता है । इसकी अर्थवत्तापूर्ण भाषा का भी जिक्र होता है । बिम्बों का प्राचुर्य भी इसमें अधिक उजागर हुआ है । नवीनतम प्रतीकों की भरमार से, इसके द्वारा जीवन दृष्टि को अधिक परिष्कृत किया जा सका है । वस्तुतः य प्रतिबद्धताएं काव्य क्षेत्र में दिशामयी क्या नहीं रही है ? जब कविता का अन्यथावादी बना दिया गया, तभी तो वह निर्दिशामयी होकर एक गुट विशेष की हो गई । सत्य यही है कि कविता आज भी कविता ही है । चाहे वे छंदबद्ध हो, चाहे मुक्तछंद, हो, उसकी सवेदनशीलता शिल्पिक प्रतिमानों की दास नहीं है, और न ही उसे चमत्कारपूर्ण अभिदान देकर, मूल स्वरूप से बदला जा सकता है ।

प्रस्तुत काव्य संकलन कविता विषयक नई भ्रान्तियों का करारा उत्तर है । अध्यापक जैसी साधारण किन्तु विराट शक्ति ने, यह चुनौती दी है कि कोई उसे यह कहकर तो देखे कि उसे कविता लिखने की समझ नहीं है । साधना और अटूट अनवरतता के अभाव में कहीं कहीं छंदभंग है और कहीं कहीं अर्थलय की संघात भरी त्रुटि भी किन्तु शिल्पगत ऐसा दोष तो सर्वत्र है । मुक्तछंद में लिखी हुई कविताओं में ऐसे व्याघात अधिक हैं । जिन अध्यापकों को छंद का ज्ञान है उनका मुक्तछंद भी सहज और सौम्य है । जिन्हें पिंगल का प्रारम्भिक ज्ञान भी नहीं है उन्होंने मुक्तछंद में लिखी कविता की अधूरी समझ से उसकी आत्मा के साथ दुष्कर्म किया है । सौभाग्य से ऐसे उदाहरण बहुत कम हैं ।

पिछले चार दशक मे मन अपनी काव्य यात्राआ म यही पाया है कि कविता का ह्रास नहीं हुआ ह । वह आज भी सशक्त अभियक्ति है। कभी कभी जन सपक से हटकर वह वाद्धिक विलास का साधन भी बनी है, कि तु एसे आयाम बहुत थाडे आए है। अत कविता का भविष्य और भी उज्ज्वल है। अध्यापक बधुआ को चाहिए कि वे कविता का राह चलती तुक्वदी का साधन न बनाए और न मुक्तछद के नाम पर या नइ अभिव्यक्ति के नाम पर, उसके शाश्वत अगा को पोलियोग्रस्त बनाए। केवल टढी मढी पक्तिया लिखना ही नई अभिव्यक्ति नही है। कविता जीवन का सार ह, कविता आत्मा का रस ह, अत उस नाम कुछ भी दें, शिल्प काई भी प्रदान करें उसके स्वरूप की स्वाभाविकताओ को न बदलें। उसे विचार वीथियो की याना करने दे, कि तु उसे पथभ्रष्ट हाने से बचाए।

सु दर और प्राण शक्ति म भरी कविता सुसस्कृत अध्यापकीय जीवन का ऊर्जा देती ह। यदि वह स्वय एसी कविता का निर्माण करता है तो वह निश्चय ही अध्यापकीय सुसस्कारो से सम्पन्न ह। मेरा व्यक्तिगत अनुभव है कि मेरे भीतर सन् 1944 मे जब एक छाटा सा अध्यापक था तब मैंन अपन सुसस्कारा के बल पर ही "सैंनाणी" जसी रचना का रसानुभूति और सौ दयानुभूति से सम्पन्न कर उसका विराट जन शक्ति क साथ तादात्म्य स्थापित करवा दिया था। इसका श्रय मेरे व्यक्ति को नही, मेर भीतर अवस्थित अध्यापक के व्यक्तित्व का था। उस युग म यदि मैं "सैंनाणी' लिख सकता था ता आज के युग म अध्यापक उस रचना मे अधिक सशक्त कविता लिख सकता ह। इसका प्रमाण प्रस्तुत काव्य सकलन मे सग्रहीत कुछ रचनाए हैं जो परिवर्तित युग का घोप करती हुई,नय-नये काव्य आयामा को स्थापित करने मे सफल ह।

सैंनाणी" से भिन्न इस काव्य-सकलन म प्रस्तुत निम्नलिखित कविता को पढिये। मन हुआ व दावन' शीपक से लिखी इस कविता मे श्रीमती सावित्री परमार न, अपने अध्यापकीय सस्कारा म पिरोकर जो भावनाए व्यक्त की हैं और जैसे मनभावन शिल्प से उस सजाया है, वह केवल प्रशसात्मक शब्दो म नही बध पा रहा। उनके श्रवण और नयन स प्रवश पाकर एक वशी की धुन मन म उतर आइ है, और फिर सम्पूण मन ही व दावनमय हा गया है —

दूर वशी बज उठी
मन हुआ व दावन
लल छोही सी भोर सदली
उलट गइ अधियारी पर्तें

साप घपई
सूरज किरणें
　　बाध गया दिनकर की शर्तें
पाती मी खुल गई
धूप का छूकर चदन
　　खेता खलिहानो मे छलका
मौसम का वासती झरना
　　मधुमाती बाहो म महुवा
सरसा का शृगारित सपना
सूरजमुखी क्षणो की यादें,
　　रचा गई दरपन !

अब आप ही बताइए है कोई जवाब इन अछूती अनुभूतिया का ? इसी प्रकार की कितनी ही रचनाए श्रीमती सावित्री परमार की तरह अय अध्यापक-अध्यापिकाओ ने लिखी होगी । इनम से श्री भगवतीलाल व्यास भी एक अनूठे कवि के रूप म इस प्रकार हम झकझोरते हैं—

'मा जी जब आप अनपढ हैं
हिसाब किताब नही जानती
तब लेनदेन हम क्या नही सौंप देती ?'
मा की छाटी छाटी
गडढो म धसी आखा म
न शिकायत कौंधती है
न कोई उत्तर मचलता है ।
बस, मा की आखें
निर्विकार हा रहती हैं
　　　　सून आकाश की तरह !

मा की आंखें, जिन्होंने ऐसी करुणा मागी और विवशता म पगी दखी हैं, और जिन्हाने आधुनिक बहुआ के तेवर पहचाने हैं, वे जानत है कि बूढी दह म और विशेषकर गडढो म धसी आखो म शिकायत क्या नही कौंधती और कोई उत्तर क्यो नही मचलता। श्री भगवतीलाल व्यास ने केवल दो पक्तियो मे, पीढियो के बीच म पडी दरार को, गहरी सवदनात्मक अनुभूति द्वारा सशक्त अभिव्यजना प्रदान की है ।

ऐसी कविताए अनेक हैं। उनमे से कोई-कोई अधिक कौंध जाती है। श्री चन्द्र मोहन हाडा 'हिमकर' की निम्नलिखित पंक्तिया नितान्त भिन्न प्रकार से व्यक्त हुई है—

नवजीवन म तूफान तिमिर,
मन विकल विकम्पित रहता है।
जब मानवता पर सकट हो,
कवि रोकर जग को कहता है—
'नफरत की खेती बन्द करो,
फिर प्यार से प्यार उमडता है।
जो जलता है वह गिरता है।
जो हसता है वह चढता है।'

प्रश्न उठता है कि ऐसी सीधी-सादी किन्तु ओजपूर्ण अभिव्यक्ति को आप किस श्रेणी मे रखेंगे ? इसम भाषा मुहावरे का नया दम्भ नही है। न बिम्बविधान है, न प्रतीक रेखाए। फिर भी सम्पूर्ण कविता को पढकर, मन का स्पर्श बोलने लगता है।

अवसाद के विस्तार म, व्यग्य का तीखापन आए बिना नही रहता। नयी कविता कही जाने वाली रचनाओ म कभी कभी असतोष और अस्वीकृति का स्वर विद्यमान रहता है। टूटन की तल्खी सक्रान्तिजन्य सत्रास, विसगतिया, मूल्य-हीनता आदि ऐसी भावनाए है, जो भोग हुए क्षणो स असपृक्त होकर भी, अपने को दैनिक जीवन की जुगुप्साओ से जोडती चली जाती है। लेकिन ऐसी यातनाए, अध्यापक से बढकर कौन पा रहा होगा ? वह तबादलो से भयभीत और त्रस्त रहता है, क्योकि उसकी आर्थिक दुर्दशा उसे इज्जत-आबरू स जीने नही देती। वह हडताल और अनशन का सहारा लेता है क्योकि उसके पास और कोई सहारा नही है। वह ईमानदारी से विद्यार्थियो को पढाता भी नही है, क्योकि सामाजिक कुटाओ ने उसे पग-पग पर रौंद रखा है। उसका शिक्षण स्तर गिरता जा रहा है, क्योकि किताबो म लिखा हुआ अधिकाश भाग थोथे उपदेशो से बोझिल है। उसके छात्र निकम्मे, नशेबाज, अनुशासनहीन और आन्दोलनकारी है क्योकि वह अध्यापक और शासन तन्त्र से कुछ भी नही पाता। नई-नई योजनाए बरसो स बन रही हैं किन्तु वे वर्तमान आवश्यकताओ की धमनियो मे जहर अधिक भरती हैं। लेकिन जहा अच्छे स्कूल हैं अच्छे अध्यापक हैं अच्छे छात्र हैं, वहा कविता नही फूटती। कविता फूटती है वेदना के मुहाने पर। इस सकलन म सग्रहीत कवि-

(ाओ के पीछे वेदना की सही अभिव्यक्तियां है। ऐसा लगता है, जैसे प्रत्येक कवि के हृदय से लावा फूट रहा हो। वह किन्हीं अदृश्य जंजीरों को तोड़ने के लिए कसमसाता हुआ-सा दिखाई देता है। उसकी छटपटाहट असली है। इसीलिए वह मन से कुछ न बोलकर कविता में प्रस्फुटित होता हुआ, नदी नाले और पहाड़ों को लांघता हुआ चला जाता है।

मुझे इन नये नौजवान कवियों से मिलकर आन्तरिक प्रसन्नता मिली है। इनमें अदम्य उत्साह है। मेरे युग की लेखनी का इन्होंने देखा-परखा है और उससे अधिक शक्तिशाली लेखनी लेकर कविता को सही पथ पर आगे बढ़ाया है। आज से कुछ वर्ष पूर्व मुक्तिबोध ने लिखा था—

जीवन धर्मा अध्यापक कवि जितना टूटा है उतना जुड़ा नहीं है। बाहर और भीतर की टूटन उसे न शिक्षक बनकर रहने देती है, न कवि बनकर! आखिर कौन हैं वे उत्तरदायित्वहीन तत्व जो उसे सब्जबाग दिखाकर भी जीने नहीं देते? कविता तो उसे इसलिए जीवित रखती है कि वह आखिरी दम तक लड़े, युद्ध करे। अध्यापक कवि आज भी ठीक चुनाव नहीं कर पा रहा कि वह क्या करे क्या न करे! इस संकलन में भी ऐसी विवशताएं दिखाई देती हैं।

आज शिक्षक शिक्षक तो है लेकिन गुरु नहीं है। वह वैभव तो चाहता है रूप और यौवन के साथ साथ यश कीर्ति भी चाहता है, पर कविता लिखकर भी वह गुरु के कमलवत चरण नहीं रखता जिनकी वंदना की जा सके। शंकराचार्य ने कहा है—

शरीरं सुरूपं तथा कलत्रं यशः चारुचित्रं, धनमेरुतुल्यम्।
मनश्चेन्नलग्नं गुरोरंघ्रिपद्मे ततः किं, ततः किं ततः किम्॥

अतः शिक्षक की वकालत करते हुए भी उसकी कविता की प्रशंसा करते हुए भी उसमें गुरु होने के अभाव की शिकायत तो रहेगी ही। लेकिन यह दोष नहीं, 'अभाव' ही है जिसे पूरा करना भी अनिवार्य है।

बी 14 विवेकानन्द मार्ग,
सी स्कीम
जयपुर 302004

(मेघराज मुकुल)

अनुक्रम

मावित्री परमार	मन हुआ वृदावन/बान वस्तूरी	17
भगवती लाल व्यास	मा की आखें/	19
चन्द्र मोहन "हाडा हिमकर"	धरती राजस्थान की/नफरत की	21
रामस्वरूप परेश	मौसम ने	23
त्रिलोक गोयल	कुल लोग	24
गोपाल प्रसाद मुदगल	टूटन	26
पुष्पलता कश्यप	शिकायत नामा	28
नवनीत कुमार व्यास	कुछ ऐसा इन्तजाम हो	29
सगीर शाद'	गजल	29
कैलाश चन्द्र शमा	भारत दश हमारा	30
विष्णु लाल जोशी	अकाल की छाया	31
ज्ञान प्रकाश पीयूष	मेरी जिदगी	32
कमर मवाडी	तुम्हारी याद म	33
राम गोपाल राही	व्यथा फला की	34
वासुदेव चतुर्वेदी	गीत नए भोर के	35
अरविंद चूरवी	बेचारा जगल	37
ओम पुरोहित ' कागद'	स्वाद बतायगी कविता	37
ब्रजभूषण भट्ट	तक्षक नाग परीक्षित	38
नन्द किशोर चतुर्वेदी	आओ बीत अधियारा	39
शिव मदुल	बीमार जलवायु	41
सीमा पवार	सूरज सी जिन्दगी	42
अरविन्द तिवारी	गीत	43
गौतम सिंह परमार	मजिल	44
चमेली मिश्र	शहर	46
रामनिवास लुवोडिया	अभिषेक/बबूल और आम	47

मणि बावरा	अस्तित्व मे जीना है	48
रफीक अहमद उसमानी	शुरुआत	49
जगदीश सुदामा	श्वेत श्याम चित्र	50
भगवती प्रसाद गौतम	चादनी की गजल	51
मिश्री लाल एम ओझा	व और ये	52
श्याम सुन्दर भारती	असली तस्वीर	54
अब्दुल मलिक खान	किसके वास्ते	61
नटवर पारीक "विद्यार्थी"	काम करो भाई काम करो	61
राम निरजन शर्मा ठिमाऊ	नमन करो स्वीकार	62
चनराम राम शर्मा	कुरुक्षेत्र	64
टी० एस० राव राजस्थानी	बुद्ध पडित बुद्धिमान	65
सन्ध्याकिरण माहिल	खुले म सिमटता	68
सावर दइया	सुबह के सगुन	69
नेनाराम टाक	रोशनी के द्वार	70
सगीता झा	आज का नवयुवक	71
अमृतसिंह पवार	बाझ धरती की कोख से	71
अहमद रशीद मसूरी	शिक्षक की परिभाषा	72
त्रिलोक शर्मा	गीत	73
पुष्पा तिवाडी	भारत माता	73
कुन्दन सिंह सजल	गजल	74
गुलाम माहियुद्दीन माहिर	गजल	76
सलीम खा फरीद	गजल	77
ओम प्रकाश सारस्वत	यह धरा तो हम सभी की	77
जनक राज पारीक	आख का शहतीर	78
हरिआम कुमार शर्मा	मौसम का बदलना होगा	79
कैलाश मनहर	लिखा, तो आदमी लिखो	80
पुष्पा रघु	अनुभूति	81
प्रेम प्रकाश व्याम	समदर	83
गिरधर प्रसाद बिस्सा	जीवन नाम नही जीने का	84
योगेन्द्र सिंह भाटी	अतर का अनुराग चाहिये	85
हरिश्चन्द्र सेन	आज हमारे युवा मात्र सम्पाती	87
भागीरथ भार्गव	आशा	88
बुलाकीदास बावरा	ओ बन्द ! जाना है अविराम	89
नारायण कृष्ण	पृथ्वी से सवाद	90

जगदीश प्रसाद आचाय	धुआँ	91
रघुनाथ बतरा	दस जोडे	92
रत्नकुमार शास्त्री	नज्म	93
बृजभूषण चतुर्वेदी	गजल	94
शारदाकुमारी भटनागर	पयावरण और सृजन	95
जगदीश सन	वदुसत्य	96
पूर्णिमा शर्मा	बसत और पतझड	97
रमन गुप्त	साध	99
रमेश च द्र उपाध्याय	एक प्रतीक्षा	100
अरनी रॉबटस	एक यग्न शिला लेख/दपण और अवस	101
मोहन लाल जाशी	प्रौढ शिक्षा	104
जिते द्र	जीवन पूछे प्रश्न	106
भूप द्र 'तनिक'	मत मरो	107
जित द्र	मरी अपनी आवाज	108
राम निवास सोनी	अहम का दश	109
रमेश कुमार वमा	सरसा	110
श्रीमाली श्रीवल्लभ घाप	मौन चेतना	111
दीपच द सुधार	प्रतीक्षा	113
वासु आचाय	समत्व भाव	114
कैलाश चतुर्वेदी	आत्म बाध	115
जित द्र शकर बजाड	व्यूह कसने दो	117
सीताराम व्यास 'राहगीर'	पैब द	118
वीरे द्र कपूर	प्रेम	119
सरला गुप्ता	अधेर से लडाई	122
अजना भटनागर	स्नह और बदलता परिवेश	123
ईश्वर लाल गार्ग	नफरत के बीज मत बाओ	125
प्रकाश तातेड	अग्नि धम	127
सुशीला मूया	शब्द साधना	128
रूपसिंह राठौड	जब से सिर पानी गुजर जायेगा	129
कुतुबुद्दीन नद्दाफ	अहसास	131
सुकान्त सुमि	भूख	132

गुलाम मोहम्मद खुर्शीद	तवग्गेली	134
भोगी लाल पाटीदार	नीति	135
मेवाराम कटारा	यौतुकी और उत्कोची संस्कृति	136
जगदीश प्रसाद मिश्र	सुहाग सिन्दूर	137
रामनाथ मंगल	दीप	139
श्याम निर्मोही	समय सत्य	140
विद्या पालीवाल	ख्वाब	141

मन हुआ वृन्दावन

सावित्री परमार

दूर वशी बज उठी
मन हुआ व"दावन।

 ललछौंही-सी
 भार सदली
 उलट गई अधियारी पर्तें
 सीप चपई
 सूरज किरणे
 बाध गया दिनभर की शर्तें

पाती सी खुल गई
धूप का छूकर चदन।

 खेता खलिहाना
 म छलका
 मौसम का वासती झरना
 मधुमासी
 बाहा म महका
 सरसा का शृगारित सपना

सूरजमुखी क्षणा की यादें
रचा गइ दरपन।

- ^

वात कस्तूरी

धूप का चदन
न मैला हो
हो न जाय उन्मनी सी
साझ सिंदूरी।
द्वार खिडकी खुलेगी
मधु भार महकेगी
एक लम्बी यात्रा पर
चल पडेगा दिन
बस्तिया गलिया
सभी हसती रहे
चुभ न जाये दद का
काटा न कोई पिन
क्षण न हो शक्ति
न छाये अशुभ छाया
घिर न जाये तपन से
आगन मयूरी।
रास्ते दु ख दद बाटे
पेड बतियाए
गुलाबो से छलकत मन
गीत मौसम के सुनाये
चेतना अपनी
सिमटकर रह न जाये
इरादो के शिखर
पीछे रह न जायें
नेह भरे श द लेकर
बनें हम व्यापक समदर
रह न जाये मुडी कारी
वात कस्तूरी।

∧

मा की आखे

भगवती लाल व्यास

अधिया गई है मा की आख
छोटी बहन की जुए बीनत
राशन के गहू म रेत और ककर
साफ करत
पिता की कमीज पतलून म
बटन टाकत या उन्हें बखिया करत
अपन लिए फटे-पुराने चिथडा
का गुदडा बनात
छत के जाले बुहारत
गाय के बछडे के लिए
बडा गूथत
अधसूखी लकडिया
और ममसाय कण्डा वाला
चूल्हा फूकत
अंधिया गई है मेरी मा की आखें
मनसापूरण महात्म्य की
कथा के मोटे आखर बाचत
विश्वास की तरह ।

मा की आखें हमेशा
ऐसी नही थी
गजरा भी गूथ लती थी वो
गणगौर के लिए
जीजी की साडी पर
सलम सितार का
बारीक काम कर लती थी
वो रात भर जागकर
चिमनी के उजास म
मेहदी क पान फूल और
बूटे कोर दती थी हूबहू

माहल्ले भर की बहू-बेटिया की
गुदगुदी हथलिया म
सावन का लहरिया आढकर
मा जब झूले पर चढती ता
बाच लती थी उसकी आखें
सितारा म लिखी कविताए
पिता के अन्तर्देशीय
जा परदस से भेजे थे
उन्होन नौकरी क दिना म
मा ने आज भी सभाल रखे ह
बार बार पढ़ने क लिए
मगर धीर धीरे
सब कुछ धुधलाता गया
स्याही के लिबास की तरह।

जब कुछ ज्यादा ही अधिया गई हैं
मा की आखें
वह सब्जी वाले का
अठन्नी के भ्रम म रुपया थमा दती है
कभी कभी
ऐसे वक्त म पास खडी
छोटी बहू बडबडाती है—
'मा जी, जब आप अनपढ है
हिसाब किताब नही जानती
तब लेन देन हम
क्या नही सौंप दती ? '
मा की छाटी छोटी
गडढा म धसी आखा म
न आसू छलछलात हैं
न शिकायत कौधती है
न कोई उत्तर मचलता है।
बस मा की आखे निर्विकार
हा रहती ह
सून आकाश की तरह।

∧

धरती राजस्थान की

चन्द्रमोहन हाडा 'हिमकर'

आओ मित्रो! तुम्हें दिखावें झाकी राजस्थान की,
इस प्रदेश के कण-कण म है गाथा गौरव गान की ।।
यह देखो मेवाड उदयपुर लगता ज्यो कश्मीर है ।
इसकी मिट्टी के कण-कण म पैदा होते वीर हैं ।।
अब विकास की लहर इसे नवजीवन द चमकाती है ।
खोज खनिज के नवयन्त्रो स जनजीवन विकसाती है ।।
हल्दीघाटी म है सुरक्षित शक्ति नये बलिदान की ।
इस प्रदेश के कण कण म है गाथा गौरव गान की ।।

राणा प्रताप के शान की ।
भामाशाह के अनुदान की ।
यह धरती राजस्थान की ।।

यह देखो चित्तौड खडा गर्वोन्नत जिसका भाल है ।
स्वतन्त्रता की युग युग से जो थाम हुए मशाल है ।।
डूगरपुर में भील सुखी, बासवाडा सबको प्यारा है ।
अबरक का सिरताज आज भीलवाडा सरस न्यारा है ।।
यह प्रताप की शान मान मीरा के निज अभिमान की ।
बलिदानो की अमर भूमि यह विजय पथिक के गान की ।।

वीरो के अभिमान की ।
नवजीवन ज्योति प्राण की ।
यह धरती राजस्थान की ।।

यह पाली, नागौर और जालौर का मस्तक ऊचा ह ।
वीरा की तलवारो के विक्रम स इनको सीचा ह ।।
बाडमेर है सीमा प्रहरी, ज्योतित जैसलमर है ।
गगानगर चूरू भी देखो विकसित बीकानर है ।।
सुभग सिरोही हमको प्यारी आबू क अभिमान की ।
मारवाड का प्राण जोधपुर जय जय रेगिस्तान की ।।

दुर्गादास के आन की ।
जय रामदेव के गान की ।
यह धरती राजस्थान की ।।

युग युग स वहनी यह चम्बल वाटा नगर सुहाता ह।
विद्युत वी शक्ति से नव उद्योगा वा सरसाता ह॥
पवतमाला स अवगुण्ठित बूदी हमे लुभाती है।
झालर वी झकारा स यह झालावाड बुलाती है॥
हाडौती वीरा की भूमि सूयमल्ल के गान की।
गौरव गरिमा स मण्डित यह धरती राजस्थान की॥

जल विद्युत स उत्थान की।
नव नहरो के निमाण की।
कवियो के गौरव गान की॥

अलवर और भरतपुर देखा जिनकी शान निराली है।
टोक, सवाई माधोपुर म जगह-जगह हरियाली है॥
यह बजाज का प्यारा सीकर झुझुन माता प्यारी है।
यह देखा अजमर व पुष्कर शोभा जिनकी न्यारी ह॥
भारत का पेरिस जयपुर राजधानी राजस्थान की।
जन जागृति में रहती अग्रिम धरती राजस्थान की॥

वीरो के बलिदान की।
कवियो के अरमान की॥

आओ मित्रा! तुम्ह दिखावें झाकी राजस्थान की।
इस प्रदेश के कण-कण में है गाया गौरव गान की॥

जय जनता के बलिदान की।
जय क्रांति वीर बलिदान की॥
नव जीवन ज्वाला प्राण की।
यह धरता राजस्थान की॥



नफरत की खेती बन्द करो

नफरत स नफरत बढती है और प्यार से प्यार उमडता है।
जो जलता है वह गिरता है जा हसता है वह चढ़ता है॥

मृदु प्यार निभाने के खातिर,
जीवन मे ज्योति जलती है।
कटी रूप की कसर क्यारी में,
नफरत की कलियां खिलती हैं।

समय म सब कुछ घटता ह, निर्माण में निशदिन बढता है।
जो जलता है वह गिरता है, जो हसता है वह चढता है॥

जब रूप का दीपक जलता है
तूफान शिथिल हो जाता है।
तब ज्ञान की गगा का सगम,
जीवन जमुना स होता ह॥

सुख सुमन विहस हात कुसुमित, जीवन धन प्रतिदिन बढता है।
नफरत से नफरत बन्ती है, और प्यार से प्यार उमडता है॥

जिसका तन मन हो शुद्ध सरल,
वह सदा प्रफुल्लित रहता ह।
दु ख-द्वद वासना से पीडित,
जीवन भर दु ख को सहता है॥

दुर्भाग्य म यशधन घटता है, सौभाग्य मे प्रतिदिन बढता है।
नफरत स नफरत बढती है और प्यार स प्यार उमडता है॥

जन जीवन में तूफान तिमिर
मन विकल प्रकपित रहता है।
जब मानवता पर सकट हो
कवि रोकर जग का कहता है—

नफरत की खेती बन्द करा, फिर प्यार स प्यार उमडता है।
जो जलता है वह गिरता है जो हसता है वह चढता है॥

^

मौसम ने

रामस्वरूप परेश

वक्त का कितने दिये आयाम मौसम ने,
आदमी का हैं दिये कुछ नाम मौसम न।

झार गई मुस्वान सारी पील पत्ता सी,
दद के ऊचे किय हैं दाम मौसम न।

कुछ उदामी से भरी दी मार मटमली,
इ द्रधनुषी दी अनेको शाम मौसम ने।

बिखरे हुए हैं घास पर कुछ आस के आसू,
कुछ का माती से दिये ह नाम मौसम न।

प्यार के सपने दिये कुछ मीठी मिश्री से,
फिर दिये कडवे बहुत अजाम मौसम न।

महना पडा है दद भी हमको जुदाई का,
कभी सुधिया के दिये तीरथ धाम मौसम न।

हम न समझे नयन की भाषा तो क्या
कई बार अधरा के दिये पैगाम मौसम न।

∧

कुछ लोग

त्रिलोक गोयल

कुछ लोग—
मक्ष होते है।
दूसरा को छाया देने के लिये
स्वय सारी धूप सहते है।
फल बांटने के लिये—
पत्थर खाकर भी चुप रहते हैं।।

कुछ लाग—
दपण होते हैं।

जैसा प्रश्न वैसा जवाब।
काटे व लिए काटा
गुलाब के लिये गुलाब ॥

कुछ लोग—
बेपैंदे के लौटे होते है।
इधर भी गुडक जात हैं / उधर भी लुढक जाते है।
सबकी ना मे ना और हा मे हा मिलाते हैं॥
ये समझौतावादी नहो है।
निर्जीव है। नपुसक हैं ॥
हजारो वर्षों से वही मे वही है॥

कुछ लोग—
बहुत उथले ह / बहुत गहरे है।
उनके पास तरह तरह के चेहर हैं—
आखें खुली है, कान बहरे हैं ॥
गाल, चौकोर त्रिभुज हर खाचे मे फिट हा जाते है य।
हर अवसर पर प्रसाद लूट लाते है ये ॥

कुछ लोग—
अडियल हैं, ठूठ हैं
टूट जाते हैं पर झुक नही पाते।
खुद भी दुखी होते है—
दूसरा को भी दुखी बनाते ॥
सिफ मे ही सही हू / शेष सब गलत है
यह अहम् यह दम्भ यह विश्वास।
अकडी हुइ लाश ॥

कुछ लोग—
समय के साथ चलते हैं।
न छले जाते हैं / न छलते हैं ॥
दखल देना या सहना इन्हे कतई नही है पसद।
जैसे स्वच्छन्द छन्द ॥
अपने काम से काम।
जय सिया राम ॥

कुछ लोग—
वतमान म रहकर भी अतीत म जीत ह।
भविष्य की चादर फाड फाड कर सीते है।।
बीते हुए कल—
और आने वाले कल की रस्साकसी म
इनका आज मर रहा ह।
भगवान जाने यह क्या कर रहा है।।

∧

टटन

गोपाल प्रसाद मुदगल

हमने कई तरह की टूटन दखी है।
तुमने भी देखी होगी।
सब दखत ह।
हर गाव म,
हर कस्बें म
हर नगर में।
टूटन ही टूटन।
हर गली पर,
हर मोड पर
हर चौराहे पर।
जल में
थल में
नभ में,
टूटन ही टूटन।
कल भी थी,
आज भी है,
कल भी रहेगी।
टूटन व्यक्ति में है

परिवार म ह
गमाज में ०
हर दल में है।
टूटन ही टूटन।
सभी मैं भी टूटा हू
तुम भी टूट हा
सब टूट है।
न बालक बचा है न जवान
बुढ़ापे के आपन खूब सुने हैं बयान।
टूटन से झापड़ी बची ह न काठी,
न खेत बचा है न खलिहान,
टूटन स कौन बचा है पहलवान।
टूटन आती है
आधी की तरह छाती है
कहर ढहाती है,
किसी किसी का ता साबुत ही निगल जाती है।
टूटन का काम है—
तोडना
मरोडना,
झकझोरना,
रस को निचोडना।
मगर फिर भी
कुछ सासें
टूटन से टूट नही पाती है
आस्था और विश्वास के हाथा
टूटन के द्वन्द्व में भी उभर कर ऊपर आती है
चीथडा में भी मुसकराती है
ऐसी ही कालजयी सासें
युगो युगा तक पूजी जाती है।
पीछे मुड़कर देख ला इतिहास गवाही है।

∧

शिकायतनामा

पुष्पलता कश्यप

तक उलझत हैं
टकराव हाता है सुखिया उछलती है
यह अच्छा है कि वह
परमात्मा के आदशा शिक्षाआ की पुस्तक
यह है या वह या कि वह
पगडडिया अब भी सकीण कटीली और दुगम ही हैं

लहरें उठती है
फिर टकराकर बिखर जाती हैं
शरारे कभी कभी उभरते है वह भी जख्मी से, बीमार से
अस्तित्व आतकित ह और अपने को निरापद नही पात
विविधताआ के बीच एकता सूत्र
असल में टूट कर छिटक गया है
इस तरह कई मुक्ताए टूटती हैं
और टूट कर बिखर जाती है

गेंग्रीन की दुग ध क आस पास
कोई स्वास्थ्य बोध शेप नही
मत्यु एक निश्चित नियति है
जो रक्षक था
उसे ही अब रक्षका की आवश्यकता हाने लगी है

सव क्या है ? क्यो है ?
कोई भी झुझला सकता है
और मैं जानती हू
यह सब शिकायतनामा
प्रलाप स अधिक कुछ भी समझा नही जाएगा।

Λ

कुछ ऐसा इन्तजाम हो

नवनीत कुमार व्यास

कुछ ऐसा इतजाम हा,
पैरो म रास्ता हा हाथो म काम हो।
चीत्कार, हाहाकार, बदूक तोपें,
छोडकर इहे आओ, धान रोपें।
दिग्भ्रात युवा आक्रोश को
नव निर्माण का काम सौप।
कुछ ऐसा इन्तजाम हा,
रास्ता ना राके कोई, ना चक्का जाम हो।
शूय न हो जायें सनायें,
सवेदना क मुखर हा स्वर।
लाश ढाती सभ्यता का,
अभिमान हो जीवन पर।
कुछ ऐसा इ तजाम हा,
पडित वन ना कोई, ना काई इमाम हा।
नही चाहता उतर जाय,
स्वग धरती पर।
नहो इच्छा समा जाय,
आदमी मे ईश्वर।
कुछ एसा इ तजाम हो,
आदमी आदमी हा, आदमियत का नाम हो।

Λ

गजल

सगीर 'शाद'

क्या खेल खेलते हो इम बदनसीब दिल से।
देखो निकल न जाए आहें गरीब दिल से॥

मरी तबाही मुझको इस माड प ल आई।
दन लगा दुआए अब ता रकीब दिल से॥

न जा वा दमन से बनगा न कोई काम।
बीमार इश्क हू म दखा तबीब दिल से॥

बताबिया तुम्हारी मजबूरिया हमारी।
पोशीदा कुछ नही है दखा हबीब दिल स॥

दुश्मन नही था काई दुनिया म मेरा लकिन।
ऐ शाद खाय अक्सर मन फरेब दिल स॥

∧

भारत देश हमारा

कैलाश चन्द्र शर्मा

हम सबकी आखो का तारा भू मडल पर सबस यारा।
भारत देश हमारा प्यारा भारत दश हमारा॥

उत्तर मे गिरिराज हिमालय
मुकुट बना सदिया स।
दक्षिण सागर चरण पखार,
मिल जुलकर नदिया स।
पूरब स रवि बडे सबेर,
आकर हम जगायें।
पश्चिम राजस्थान धरा
जिसका कण कण इठलाय।

मदमाती बलखाती बहती ब्रह्मपुत्र की धारा।
भारत देश हमारा॥
गुजराती पजाबी सिंधी
बोने कोई भाषा।

हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाइ,
सबकी यह अभिलाषा।
इस धरती पर हम सब अपन,
तन मन धन औ प्राण लुटायें।
इसकी गौरव गाथा मिलजुल
ऊच स्वर स गायें।'

गूज उठे आकाश घोरकर लोकतन्त्र का नारा।
भारत देश हमारा॥
यह वीरा का दश यहा का,
जन-जन है बलिदानी।
हर बच्चा है वीर सिपाही
हर नारी अभिमानी।
यही सदा मानवतावादी,
यहा सास्कृतिक धारा।
दत ह इन सबकी गवाही
गिरजाघर, मन्दिर औ गुरुद्वारा।

ऊच-नीच का भद मिटा, यो सबको दिया सहारा।
भारत देश हमारा॥

∧

अकाल की छाया

विष्णु लाल जोशी

जेठ की दुपहरी
अगारे बरसाता सूरज
साय-साय करती हवा
बोझिल-सा वातावरण
टुकुर-टुकुर दख रहा हू
प्रकृति नटी की बहुरगी माया

रोज मर्रा का सामान लादकर
मैले कुचले कपडा को
गठरी म बाधकर
निकल पडा है काफिला
साथ लिये, पशुआ की टोली
चारे पानी की तलाश म
दो जून रोटी की आस म

∧

मेरी जिन्दगी

ज्ञानप्रकाश 'पीयूष'

मुझे एसा लगता है
मरी जिंदगी के भीतर
एक और जि दगी पल रही है
और बाहर आन के लिए
छटपटा रही है
परिपक्व गभस्थ शिशु की भाति
वह बाये से दायें और
दायें से बाय
ऊपर और नीचे हलचल करती है
मानो अपने अस्तित्व का
मुझे आभास कराती है
मा की पीडा से अनभिन
वह अबोध और पाक जिंदगी
खेल-खल म
जब कभी
गभ म निमम लात मार दती है
तब त्राध नही प्रत्युत
नवीन अनुराग पदा कर ती है

वह रोती है तब
संवेदना का
एक नया संसार रचा देती है
मेरे निजों पर
बाह्य पुलक के क्षणों में
आन्तरिक व्यथा का सागर गहरा देती है
बाहर आकर
संगीत-सी
जीवन में
लय, ताल और मिठास
घोल देती है
संवेदना, दर्द और पुलक से
घिरी रहती है
मेरी जिंदगी

ΛΛ

तुम्हारी याद में

कमर मेवाड़ी

किस तरह हो जाते हैं दिन उदास
किस तरह दरख्त के सूखे पत्तों की तरह/बिछुड़ जाते हैं लोग
किस तरह मृत्यु
लम्बी नहीं करती साँसों की डोर

मैं सोच ही नहीं सकता/कि साथ साथ चलते हुए
एक भयानक अंधेरी रात में
अचानक खो जाओगी तुम
और मैं अश्रुपूरित नेत्रों से
निहारता रहूँगा/तुम्हारी मृत देह

क्या तुम्हारे और मेरे दरमियान
किये गये इकरार का अन्त
अकेली लम्बी यात्रा की शक्ल में/सामने आयेगा
ऐसा तो मैंने स्वप्न में भी नहीं सोचा था

कितनी दूर चली गई हो तुम
मुझे बियाबान जंगल में भटकने के लिए/अकेला छोड़कर
आज तुम्हारी यादों के नुकूश
मेरे दिल के नासूर बन गये हैं
और हर लम्हा/दर्द का सैलाब बनता चला जा रहा है

लेकिन बिल्कुल नहीं लगता
कि तुम अब नहीं हो इस दुनिया में
हमेशा यह अहसास बना रहता है
कि अचानक किसी वक्त/चूड़ियां खनकाती
मेरे सामने आकर खड़ी हो जाओगी तुम
जबकि यह सूरज के उजाले की तरह सत्य है
कि अंधेरे के साम्राज्य में खो गयी हो तुम
और अब कभी लौटकर
नहीं आओगी मेरे पास

∧

व्यथा फूलों की

राम गोपाल 'राही'

नंदन वन में बहुतायत है ऊंचे खड़े बबूलों की।
डाल डाल बेहाल हुई—व्यथा न पूछो फूलों की ।।

मौसम बदला ठहर गया पतझड बारह मास रहे,
मार मारे मधुप विचार उनके नही प्रवास रहे।
कलियों का शृंगार नही है, जय-जयकार है शूलों की,
नदन वन में बहुतायत है, ऊंचे खड़े बबूलों की।

ऐसा हुआ प्रकोप फूल के अकुर सारे नष्ट हुए
यह काट है लेकिन फिर भी बबन, वही उत्कृष्ट हुए।
निर्माल्य के पात्र उपक्षित, टूटी बात बसूलों की,
नदन वन में बहुतायत हुई ऊंचे खड़े बबूलों की।।

Λ

गीत नए भोर के

वासुदेव चतुर्वेदी

सूरज
बीमार सा
पथराया
निढाल हो
पसर गया
गहन अधकार
तन मन
जड चेतन को
लील कर
दद पी गया।
जड चेतन
बेसुध हो
सपनों में खो गया
मन का दुख

गुम का गुरज
अधिमार की आट म
न जा । कप
गा गया ।
गग । म पान । मे
गार गारियां
गा गावन
भ न गगनियां
न नपर
गात दुख का महसान रह
पहकन
जागन रह,
पस म सूरज का
नमा परन
अपनी कहानी
मीन मूक कहत रह
गाफिल मन की वीणा
पुरान गीता का
दाहरा रही है,
दस्तक
नए सूरज की
उषा का सिन्दूरी आचल
पहना रही है,
नन भार के
भूल बिसर गीत
वह गुन गुना रही है
तुम जागो पर
दद माया मत जगाआ
मन का अधियारा भाग जाए
एसा गीत
नए भार म सुनाआ ।

बचारा जगल

अरविंद चूरुवी

हरा भरा सुवासित है, य कुवारा जगल
प्यारे ! प्यारो से भी लगता है ये प्यारा जगल ।
इसका हर पेड दस बेटा के समान—
कोई भूले से न समझे है आवारा जगल ।
हवा, पानी खुराक देता सजीवन बूटी,
नीम मुर्दा के खातिर हैं अमरतधारा जगल ।
वृक्ष लगाओ इद्र बुलाओ रति पति हरपाओ
ऋषि का आश्रम जगल है, जागी का इकतारा जगल ।
कुदरत माता, प्रभु पिता और हम सब बहना भाई,
झरना, परबत, सागर सरिता, सूय चद्र तारा जगल ।
जगल बिना अमगल है सब, जगल स ही मगल है,
बजारे की नहीं बपौती, हम प्राण-प्यारा जगल ।
कालिदास जिस डाल पे बैठा है तू उसको काट रहा,
'अभी समय है, चेत !' सभी से कहता बेचारा जगल ।

Λ

स्वाद बतायेगी कविता

ओम पुरोहित "कागद"

जब जब भी
हलक के पिछवाड़े मरेगा आदमी
उसकी अगाडी
जन्म लेगी कविता ।
जो चीख चीख
सिहनाद करेगी
कि अब कुछ सहन नही होगा

घिसटती ज़िन्दगी का
सूप की सी चालनी से
मुक्त होना होगा,
और तब सब सच्चाई का
पहला स्वाद
तन पर चलने का
स्वाद बतायेगी कविता।

अपने अपने हिस्से के
घावों को धो
सभी को मवाद मुक्त कर
व्रण शब्दों की
शब्द वाक्यों की
वाक्य कविता की
कविता जन जन की
पंक्ति में आकर बैठेगी
और फिर कविता
महाभारत के बाद की
ठंडी बयार होगी
सच पूछिये
वो कविता
सदा बहार होगी।

Λ

तक्षक नाग परीक्षित

ब्रजभूषण भट्ट

हमने
पढ़ा था
कि—

पौराणिक काल में
एक तक्षक नाग ने
इन्द्रासन का सहारा लिया था
किन्तु—
आज, देख रहे हैं
कि—
अनेक तक्षक-नाग,
इन्द्रासन का आश्रय ले रहे हैं,
और—
फूलों में छिपकर—
परीक्षितों को डस रहे हैं
और—
हम कुछ नहीं कर पा रहे हैं।

∧

आओ बीते अँधियारों का हिसाब करें !!

नन्द किशोर चतुर्वेदी

आओ
बीते अँधियारों का
इस नयी सुबह में हिसाब करें!
ठिठुरे फुटपाथों पर
बिखरे लाचार जीवन में
सदाय अहसासों ने
कब कब कितने
उसांस भरे?
विवशता की मेहँदी रची
पसरी पसरी हथेलियों पर
किसके कितने वसन्त भरे?

आओ इस नयी सुबह म
उनका हिसाब करें।
राजनीति स धुधलाय आकाश म
सत्य का सूरज
कत्तव्य का केतु
ओमल होत होत
अहकार का अध्य बन गया
आओ बिना लजाय
फैलाकर हाथ, वतमान का
तलाश करें।
जानते हो
गाव की गर्वीली पगडडियां
सहम कर शहर हो गयी हैं
और शाति !
कही किसी दल की दलदली
कन्दरा मे
बीमार पडी है
आओ उसका इलाज करें।
कितनी बार की है मैने
अरज। अरदास
पर तुम न उतर न आये पास
तुम्ह अपना अनोखा सपना
सच करना ह।
और मुझे अपना पेट भरना है
वैज्ञानिक कृत्यो के जादू
और पिघने अधियारा से
उबरना है
आआ इस नयी सुबह म
शनै शन जगराते आदमी
की बात करें।

Λ

आ रही है
प्रदूषण की दुर्गंध !

अमृत म सराबोर
स्वर्ण शिखर के नाभिक से
संत के छद्म वेश म
कौन फेंकता है यूरेनियम के अणु
और

कौन कर दना चाहता है
अलबट आइंस्टीन की
आत्मा का विखडन !
कौन मागता है
बगल म छुरी दबाकर
मुख से
मानवता के कल्याण की दुआ !
हे जलवायु
बता तो सही
आखिर तुझे क्या हुआ ?

∧

सूर

सीमा

मैं
उदय होते
परवान
और ढलते
रोज दखती

आने लगी है
प्रदूषण की दुर्गंध !

अमृत में सराबोर
स्वर्ण शिखर के नाभिक से
संत के छद्म वेश में
कौन फेंकता है यूरेनियम के अणु
और

कौन कर लेना चाहता है
अलबर्ट आइंस्टीन की
आत्मा का विखंडन !
कौन मांगता है
बगल में छुरी दबाकर
मुख से
मानवता के कल्याण की दुआ !
हे जलवायु
बता तो सही
आखिर तुझे क्या हुआ ?

∧

सूरज-सी जिन्दगी

सीमा पवार

मैं
उदय होते,
परवान चढ़े
और ढलते सूरज का
राज देखनी हूं

आने लगी है
प्रदूषण की दुग ध !

अमृत म सराबोर
स्वण शिखर के नाभिक से
सत के छद्म वेश म
कौन फेंकता है यूरेनियम के अणु
और

कौन कर देना चाहता है
अलबट आइस्टीन की
आत्मा का विखडन !
कौन मागता है
बगल मे छुरी दबाकर
मुख से
मानवता के कल्याण की दुआ !
हे जलवायु
बता तो सही
आखिर तुझे क्या हुआ ?

∧

सूरज-सी जिन्दगी

सीमा पवार

मैं
उदय होत
परवान चढे
और ढलते सूरज का
राज दखती हू

हर सुमन बना है अंगारा,
हर कली बन गई दीप शिखा।
कोयल की कूक बनी कर्कश
ऋतु राज गया शृंगार दिखा॥
यह दूर क्षितिज में छिपी हुई
छाया मुझको इंगित कर दे।
मैं मौन रहूं तू स्वर भर दे॥

अध खुले पलक जल भरे नयन,
कहते अतीत की मूक कथा।
लो झरना बनकर फूट पड़ी,
मेरे जीवन की करुण व्यथा॥
सरिता का आलिंगन पाकर,
निर्झर तन को कम्पित कर दे।
मैं मौन रहूं तू स्वर भर दे॥

कल कल का गान सुना करके,
कल के सपनों में घूम गया।
पल भर को रोमांचित होकर,
मंजिल पर आगे घूम गया॥
इन मृदुल पलों को कल्पित कर
कोई मुझको हर्षित कर दे।
मैं मौन रहूं तू स्वर भर दे॥

कल की खुशियों में मस्त हुआ
तन झूम उठा मन मुस्काया।
पर किस्मत की रेखा ऐसी,
युग बीत गया कल ना आया॥
वीरान अधर में कोई,
मुझको छूकर विचलित कर दे।
मैं मौन रहूं तू स्वर भर दे॥

Λ

जलन है य पाव तक सीमित नही
आग की पूरे बदन पर मन सको तो साथ आओ।

पीर की बढ़ती चुभन से शक्ति जो
मुस्कान होठो पर बढे दुगनी
एक प्रण्ण किन्तु विचलित हो नही।
तन मन अगर करला पड़े छलनी।

भट्टियो मे कूदने की बात करते हो,
इस्पात मे यदि ढल सको तो साथ आओ।

खुरदुरे फर्श का आदी बहुत हू मैं
फर्श चिकना बहुत तुमको चोट देगा।
खाल दो अभिव्यक्ति के हर द्वार को
कुछ न कहना बहुत तुमको चोट देगा।

मूक रहकर भी हृदय रखना मुखर
दीप की लौ अगर बनकर जल सको तो साथ आओ।
यातनाओ का शिविर मैंने लगाया है
पीर की पगडडियो पर चल सको तो साथ आओ।

∧

मजिल

गौतमसिंह परमार

मन की वीणा के तारो को
कोई आकर झकृत कर द।
मैं मौन रहू तू स्वर भरदे॥

हर सुमन बना है अगारा,
हर कली बन गई दीप शिखा।
कोयल की कूक बनी कर्कश
ऋतु राज गया शृगार दिखा।।
यह दूर क्षितिज मे छिपी हुई
छाया मुझको इगित कर द।
मैं मौन रहू तू स्वर भरदे।।

अध खूले पलक जल भरे नयन
कहत अतीत की मूक कथा।
लो झरना बनकर फूट पडी,
मरे जीवन की करुण व्यथा।।
सरिता का आलिगन पाकर,
निझर तन को कम्पित कर द।
मैं मौन रहू तू स्वर भर द।।

कल कल का गान सुना करके,
कल क सपना म घूम गया।
पल भर का रोमाचित होकर,
मजिल पर आग घूम गया।।
इन मृदुल पलो को कल्पित कर,
कोई मुझको हर्षित कर द।
म मौन रहू तू स्वर भरदे।।

कल की खुशिया म मस्त हुआ
तन झूम उठा मन मुस्काया।
पर किस्मत की रेखा एसी,
युग बीत गया कल ना आया।।
वीरान अधर म कोई,
मुझको छूकर विचलित कर द।
मै मौन रहू तू स्वर भर दे।।

∧

शहर

चमेली मिश्र

शहर में रोटी
तो मिल गई,
मगर मकान
नही मिला।
भीड में राह
तो मिल गई
मगर पहचान
नही मिली।
पास पास रहे
मगर मित्र तो
नही बन सके।
एक ही दीवार,
तोड नही सके।
तमाशबीन तो
बहुत मिल गये
मगर शव की
शिनाख्त के लिए
चश्मदीद गवाह
नही मिले।
शहरी जीवन—
स्पेयर पार्ट्स
मिलकर,
मशीन बन गया।

∧

अभिषेक

रामनिवास लुवाडिया

आधुनिक सभ्यता
(मग मरीचिका)
आकषण—
बन गया जीवन त्रासदी।
व्यथित मन
करता क्रदन,
भटक रहा—
सुनसान में,
वीरान में
अतर मे लिए—
अनबुझ चुभन।

फिर भी वह —
आस लिए
खाद रहा—
अस्तित्व भूमि।
शायद कहो,
प्रगट हो रत्न कोई।
आभा से जिसकी—
छट जाए अधकार,
थम जाए अश्रुधार—
दुर्निवार।
और हा
एक बार फिर स
आत्म ज्याति स
चिर अमरत्व स
शाश्वत सत्य से
जीवन का अभिषक।

Λ

बबूल और आम

बबूल
और आम
दोनो यथार्थ हैं।
प्रकृति की सौगात है।
कल थे,
हैं और रहेंगे।

बबूल—
नफरत मे पलते हैं।
प्यार मे सदैव—
आम फलते है।
स्नेह और प्यार ही है वह
जिसके अभिसिंचन से
काटो संग फूल
और बबूल संग
आम फलते हैं।

∧

अस्तित्व मे जीना है

मणिबावरा

शिक्षक
आकाशीय आयाम सा
सागरीय गहराई सा
जहा न छुटपन
न वहा उथलापन
शिक्षक एक सत्य है
जिसे समाज स्वीकारता नहीं

उसके आइन मे उपक्षित
ठीक स कोई सहलाता भी नही
पर बधु !
नइ पौध
नई पीढी की
शाखें
पाखे
आखे
दिग्भ्रान्त दिग्भ्रान्त दिग्भ्रान्त
समय का आसव
चाहे जैसा हो पीना है
अतस म धुआ
पर अस्तित्व मे जीना है।

∧

करआत

रफीक अहमद उसमानी

तुम तो मानिन्द उस परिन्द के,
जिसम परवाज की नही ताकत,
हो गए आप इतने क्यो मजबूर,
सच भी कहने की ना रही हिम्मत।

जब हवाओ से आप डरते हैं,
सामना क्या कराग तूफा का।
जिदगी दी है काम करने को,
दन्‍ पहचानियगा इसा का।

वितन चमक रह हैं वेनूर य गौहर,
रनका यहा वजूद क्या इनकी बिसात क्या।
द तो रहा ह राशनी जलकर व इक दिया,
इन आंधियो वे दौर म पर एहतियात क्या।

वक्ते गम गैर ही नही ए दास्त
साथ अपन भी छोड दत है।
खुदपरस्ती की मय को पीकर व
जाम रिश्तो वे तोड दत हैं।

बहुत की काशिशें तुमने मरी हस्ती मिटान की,
मगर कुछ वात मुझम थी पशेमा तुमको कर डाला।
बहुत चाहा था तुमन फूक दू मर नशमन का,
मरे एहसान इतने थ निगहबा तुमको कर डाला।

∧

श्वेत-श्याम चित्र

जगदीश सुदामा

मटमल कॉलम म
हम स नम भी
आया व अल
रग
श्वत
यादा स
स

मुह अपना सिये हुए
जिन्दगी को जिये हुए
साथ अपने लिये हुए
हाथों म पूजा की
पाथिया पवित्र।
बदबू से भरे हुए
अपन से डरे हुए
जीते जी मरे हुए
कपडों पर छिडके है
आयातित इत्र।

∧

चादनी का गजल

भगवती प्रसाद गौतम

कल तलक जो थी कुआरी चादनी,
आज है कैसी बिचारी चादनी।

शहर से चल आ बसी इस गाव म,
धूल म पसरी दुलारी चादनी।

नाज नखरे रख दिये सब ताक म,
छाटती अब खेत-क्यारी चादनी।

दाल रोटी पट न क्या माग ली,
ढो रही घर घर तगारा चादनी।

खासती झुक झुक, धुए का कोसनी,
फूकती चूल्हा हमारी चान्नी।

∧

वे और ये

मिश्रीलाल एम० ओझा 'विश्वास'

एक समय था
जब
हौसले बुलन्द थे
सीने तने थे
दांत भींचे थे
        मुट्ठियां कसी थीं
        भौंह चढ़ी थीं
        बांह फड़की थीं
        असि खड़की थी
इस देश की जवानियां
उन्मुक्त तूफानी नदी की तरह
चल पड़ी थीं
देश हित
शहादत को मिलने,
इसलिए कि
देशवासियों के लिए
अनन्त की बन्द खिड़की
सदा के लिए खुल सके,
चिड़ियाओं की भांति
स्वच्छन्द हो
चहक सकें फुदक सकें,
दांव पर लगे
अपने अस्तित्व के बदले
भविष्य की सुखद
सुबह शाम देख सकें
घुटन भरे तिमिराच्छादित
वर्तमान के बदले
उज्ज्वल भविष्य को पा सकें,
घबराये व दबाये गये जन
अपने राष्ट्र को

'अपना' कहने का साहस पा सकें
पर
आज
अजीब हाल है हमारा
हमने उनके कार्यों को
रेत के पदचाप की तरह मिटा दिया है,
उनके अमूल्य रक्त की
कीमत को इतने ही में भुला दिया है,
उनके सुनहले स्वप्नों को
अनजान या गैरजान विसार दिया है।
और
आज की जवानियां
बनकर माली
अपने ही चमन को
उजाड़ रही हैं,
विखण्डता, मानव हत्या
और
वैमनस्यता का
रास रच रही हैं,
अपनी शक्ति को
अपनों से ही ताल
राष्ट्र को पंगु बना
तीसमार खां बन रही हैं।
वे भी इस देश की
जवानियां थीं
और
ये भी इस देश की
जवानियां हैं
अंतर
इतना भर है
कि
वे
और
ये

वे और ये

मिश्रीलाल एम० ओझा 'विश्वास

एक समय था
जब
हौसले बुलन्द थे
सीन तने थे
दात भीचे थ
　　मुट्ठिया कसी थी
　　भौह चढी थी
　　वाह फडकी थी
　　असि खटकी थी
इस देश की जवानिया
उन्मुक्त तूफानी नदी की तरह
चल पडी थी
दश हित
शहादत को मिलने,
इसलिए कि
दशवासिया के लिए
अनत की वद खिडकी
सदा क लिए खुल सके,
चिडियाआ की भाति
स्वच्छन्द हो
चहक सकें फुदक सकें,
शाख पर लग
अपन अस्तित्व क बद
भविष्य की सुगन्ध
सुबह शाम ले सकें
पुष्प भरे निमिरा ट
वनमान क बन्न
उज्ज्वल भविष्य को
परगाय क दबाव म
अन्न राष्ट्र का

सब की बस एक आग
सब का बस एक राग
भूखे हैं—भूखे हैं

पछिया न
छोड दिया है रैन बसेरा
साद न फेरी
स्वामी बाबा ने मठ
और नाथ ने डेरा।
खेत—
सूने पडे हैं
हरियल नीम की जगह
ठूठ खडे हैं

भेद करना मुश्किल हो गया है
खाल मे
और
छाल मे

इस हाल मे
प्रीत छकी वे बातें—
सावन की, झूला की
बागा की, फूला की
लहरात खेतो म
बचपन की भूला की
पनघट की छेडछाड
नदिया के कूलो की
मिमियात रवड की
रभाती गायो की
डकराती भसा की
पशा-परपशा की
गेसा की, बसो की
हाट की हथाई की
गगिय जाट और

अपनी तस्वीर

श्यामसुदर भारती

पानी की
एक एक बूद को तरसता
मीलो मील पसरा हुआ
दमकता
दहकता
धधकता
सुलगता हुआ यह
रेगिस्तान
जिसकी
लपलपाती लपटो की गोद म
बसा हुआ है
मेरा गाव—
भट्टी पर चढी हुई
हाडी की तरह
सीज रही है देह
यह
नेह तोड चुका है
छोड चुका है बाट
हाट सूने पड़े हैं
मनुष्य
जानवर
और पेड
एक लिबास मे खडे हैं
खें खें करती हवा
चौफेरू साय साय
घर घर म सन्नाटा
मसाणिया चुप्पी
सूख गई बावडिया
नाडी भी
बेरे भी सूखे है

पदमिय गाई की
जमी हुई जाजम प
चिनम पर धरे हुए
धधयन गोरे की
गदवन्त गोच और
झरझरते सीर की
पावडिया ग्वार-फली
बोर की मतीरे की
वेन और बीरे की
जापे की स्यापे की
नाते की रिश्ते की
आणें की टाण की
ब्याह और मुकलावा
लाव लेजावें की
तारा से भरी हुई
रगभीनी राता की
हेत भरी बातें अब—
नही आसपास है
कल एक कहानी थी
आज इतिहास हैं

(धरती है बाझ और
हिजडा आकाश है)

और उधर—
धसी हुई खाट मे
अटकी हुई जो सास है
इसकी भी एक कहानी है
यह मेरे गाव की—
भूतपूव जवानी है

लकिन—
हे भगवानो
हे अल्लाह!

अपनी दा महीन की लोथ को
अफीम की चूक ? जाती है
ताकि वह चुप रहे
(या चुप ही हो जाय)

बनिया
आज भी उधार तालता है
बेचारा—
कुछ भी नही बालता है
उधार भी कितना है
फक बस इतना है
सामान लेने
पहल बापू जात थे
अब बिटिया जाती है
(बस—थोडा रुक कर आती है)

हमशा डग डग हसता रहने वाला
बीझा बावा उदास है
बात—
कुछ खास है
इस बार नीमली का
धोरिय चढाने का विचार था
वह आग बढ गया
(सब ऊपर वाले की मर्जी है)
नीमली धोरियै नहो चढ मकी
धोरा नीमली पर चढ गया

इस बार भी
हर बरस बनने वाली सडक
फिर बन रही है
मर गाव म
अकाल राहत काम चल रहा है
चौफेर अधेरा ह

आओ—
तुमको मेरे गाव की
अदरूनी हालत बता रहा हू
जो नही देखी—
वह दिखा रहा हू
यह
मेरे गाव की असली तस्वीर है
यहा एक ओर—
राहत के गीत गाये जा रहे हैं
दूसरी तरफ
आदमी जानवर
और जानवर आदमी खा रहे हैं

आओ—
आओ और देखो
नगी आखो से तो तुम
देख नही पाओगे
अपने कैमरे की आख से देखो
मेरे गाव की
यह तस्वीर
देखो—
इसे गौर से देखो
और रग रोगन लगाकर
बाजार मे फेंको

खूब बिकेगी
मेरे गाव की यह
असली तस्वीर।

∧

किसके वास्ते

अब्दुल मलिक खान

उठ रहे ये गर्दिशी गुब्बार किसके वास्ते ?
कर रहा है वक्त तीखी धार किसके वास्ते ?

फूल दुनिया ने चुराये जिन्दगी के बाग से,
राह में फैला दिये हैं खार किसके वास्ते ?

आदमी के दिल में ही हदबन्दियों की हद हुई,
चुन रहे हैं राज अब दीवार किसके वास्ते ?

उस किनारे की जमीं पर हर खुशी उगने लगी,
आँसुओं की धार है इस पार किसके वास्ते ?

फरियादियों को लग चुकी फाँसी गुजिश्ता रात को,
लग रहे हैं और अब दरबार किसके वास्ते ?

∧

काम करो भाई काम करो

नटवर पारीक 'विद्यार्थी'

एक बाग के फूल हैं
सबकी महक निराली है।
भाई भेद नहीं हम में
एक हमारा माली है।
  ममता का आह्वान करो।
  काम करो भाई काम करो।।

सूरज के अनुयायी हैं
जगत और जगाते है।
आलस तम नजदीक नही,
आगे बढते जात है।
सूरज बनकर नाम करो।
काम करा भाई काम करो॥
महनत का अध्याय पढा
खेतो औ' खलिहाना म।
श्रम की है जय' सीखा,
पथरीली चट्टाना स।
धरती का श्रमदान करो।
काम करो भाई काम करा॥
जीवन म खुशहाली हो,
कोई भूखा रह नही।
सबके हित जीना मरना,
आजादी का जय यही।
नव भारत निर्माण करो।
काम करो भाई काम करा॥

/\

नमन् करो स्वीकार

(रामनिरजन शर्मा "ठिमाऊ"

वीर प्रसूता भारत मा
सश्रद्धा हम नमन कर रही
नमन करो स्वीकार
नमन करो स्वीकार।

खेल कूद कर इस मिट्टी म
हमन जीवन पाया
हर भर तर आगन म
सदा मिली है शीतल छाया।
तरी सवा लक्ष्य हमारा
कोटि कोटि आभार
नमन करा स्वीकार
नमन करो स्वीकार।

आज दश की अखण्डता को
बना हुआ है भीषण खतरा,
ग र रहगा भारत जब तक
रहे खून का कतरा।
धर्मो पर जो बाट भारत
उसका है धिक्कार
नमन करा स्वीकार
नमन् करो स्वीकार।

लक्ष्मी पन्ना, साविञी का
खून रगा म बहता ह।
उनक बलिदानो की गाथा
भू का कण कण कहता है।
जिए राष्ट्रहित, मरें राष्ट्रहित
जन जन क उदगार
नमन् करा स्वीकार
नमन करो स्वीकार।

अग भिन्न ह, दह एक है
पर अगा का काम नक ह,
धम जाति तो भिन्न भिन्न ह
पर राष्ट्र एक ह दश एक है।
पेड एक है, तना एक है
अलग अलग है डार

नमन करो स्वीकार
नमन करो स्वीकार ।
वीर प्रसूता भारत मा
सश्रद्धा हम नमन कर रही
नमन करो स्वीकार
नमन करो स्वीकार ।

Λ

कुरुक्षेत्र

चैनराम शर्मा

कुरुक्षेत्र म
धमराज दुविधा म हैं
सच कह नही सकत,
झूठ सह नही सकत
समाधान नही कर सकेंग
नरो वा कुजरो वा ।

छद्म व्यूह है यह
चक्र-व्यूह नही
नही तो
भदन कर लेता
अभिम यु ही ।

"यथ ही होगी गदा की मार
और असि की झकार
यहा तो चाहिय
गाण्डीव की टकार
कि जिसस
नही चढे ब धु-हत्या पाप

पर, उड़ जाये सिर
सिर फिरे जयद्रथा के
और मर जायें उनके बाप।

Λ

बुद्धू पंडित बुद्धिमान

—टी० एस राव० "राजस्थानी"

बुद्धू पंडित नाम रखा था,
पर उनमें थी बुद्धि अपार
उनकी बुद्धि और चतुराई,
फैली अवलिका के पार।

बातें हवा वग से पहुची
विक्रम राजा के दरबार,
बुद्धू पंडित की प्रतिभा की
करें परीक्षा, हुआ विचार!

और, उसी दिन पंडित जी को
राजसभा में बुला लिया
मोटी बिल्ली, गाय दुधारू—
देकर उनको सुना दिया

महाराज की आज्ञा पंडित!
इन दोनों को ले जाओ,
चार माह तक दूध गाय का
बिल्ली जी को पिलवाओ!

महाराज की यह बिल्ली है,
गर दुबली हो जाएगी,
तुम्हें दूध का चोर मानकर—
सख्त सजा दी जाएगी।

अग भग का दड चोर को
महाराज श्री देत है
दूध चुरा पीने वाले की
जीभ कटा वे देत है ।

राजाज्ञा बुद्धू पडित न
शीश नवाकर की स्वीकार
लकिन मन ही मन वे बोले—
बडी मुसीबत की करतार ।

और, साथ ले बिल्ली, गैया
यही सोचते घर आए—
गया को वह घास खिलाते,
और दूध बिल्ली पाए ।

ऐसा कैसे हो सकता है
ऐसा होना है अपमान ।
ऐसा ही होगा तो बुद्धू—
बहुत सही है अपना नाम ।

रहे सोचत बुद्धू पडित,
तरकीब फिर निकल आई,
डाला दूध कटोरे में फिर
नमक बहुत-सी घुलवाइ ।

बडे प्यार स फिर बिल्ली को
उठा, गोद में बिठा लिया
और लपककर सभी दूध म
बिल्ली का मुह लगा दिया ।

फो-फो करती बिल्ली भागी
उछली कूदी गुर्राई
लेकिन उस दिन बाद दूध को–
देख देख कर घबराई ।

एक बार जो डरी दूध से
छाछ देख भी घबराती
पर बचपन से पली दूध पर
रोटी नही उसे भाती

पडितजी अब बडी खुशी से
दूध दही छककर खाते।
मूछो पर दे ताव, रोज—
राजा को शीश नवा आते।

इसी तरह बस चार माह
हसते हसते बीत गए,
पडितजी ले बिल्ली मैया
राज सभा मे आज गए,

राजा ने जब देखा, अपनी—
बिल्ली मरने-जैसी है,
बोले—पडित जीभ कटेगी
सजा यहा की ऐसी है।

झूठ मूठ पडित आखो मे
आसू ला कर यू बोले—
दूध न पीती है यह बिल्ली
फिर मोटी कैसे हो ले।

अगर न हो विश्वास आपको
दूध पिला देखा जाए,
जीभ काट कर खुद रख दूगा—
अगर बूद भर पी जाए।

महाराज ने दूध मगाकर
बिल्ली को ज्यो दिखलाया
उछल गोद मे बिल्ली भागी
सोचा दूध पास आया।

राजा ने पडित का देखा
और तथ्य को जान गए
बुद्धू पडित की बुद्धि का,
चतुराई को, मान गए।

खुश होकर राजा ने उनका
ज्ञानी पडित नाम दिया,
और बनाकर अपना मत्री
पूण मान-सम्मान दिया।

∧

खुले मे सिमटती दूरिया

स ध्याकिरण मोहिल

आओ
दूर चलें,
नगर से बाहर, पाक के किसी कोन म।
जहा किसी की आवाज सुनायी न द
जहा काई और न हा,
सिफ हरी, कोमल घास हो—
ठडी हवा हो और दूधिया रोशनी हो।
जहा अपन' घटो बैठकर
मन की ग्रथिया खोलेंगे, बतियायेंगे।
क्योकि—
इस मायावी जगत से
इतने अनुभव लिय है कि
अगर एक दूजे को न सुनायें तो
लगता है हम शायद बहक जायेंगे।
अत
आज के इस असगाव भरे माहौल म,

काटती खामोशी मे
आवश्यक हो गया है कि—
एक दूसरे को समझें, पहचाने और
मन के सारे भाव उड़ेल दें।
बस !
लगता है यही तो आज जिन्दगी के 'निकट' होने का
रास्ता भर नजर रहा है।
अत आओ,
दूर चलें, नगर से बाहर
पार्क के किसी कोने मे।

Λ

सुबह के सगुन

सावर दइया

सूरज दे गया
दरवाजे पर दस्तक
खिडकी से आकर गिरा
आगन में अखबार
हत्याए
आगजनी
बम विस्फोट
अपहरण बलात्कार

ये तो हैं
सुबह के सगुन
बीतने को बाकी
पडा है अभी तो सामने
पहाड सा दिन
पहाड सी रात

Λ

रोशनी के द्वार की ओर

नेनाराम टाक

इस हालात म तुम म समसाओग नही—
पर्तो के नीचे दब फफोल क।
फूट जान दो
रक्त के साथ बहेगा मवाद भी
दद की इस लडाई में तुम अकेले नही हो
अपना चश्मा चढाओ,—और देखो
कहा है तुम्हारा सौंदय ?
तुम्हारी भावनाए बंद है
किसी टायर की हवा की तरह
आश्रय ढूढने की कमजोरिया
कब तक करती रहेगी आश्वस्त ?
पिछडापन छाया की तरह लगा है क्यो ?
वचित होकर भी
अपराध तुम्हारे सिर है
अकेला सच ताकत मे होता है सबल
किरण तुम तक नही पहुचेगी—
जब तक कि भुजाओ को न फैलाओगे
चौडी कराग न छातियो का
जब तक कि—
छितरा जायेगी रोशनी की किरण
तुम सच्चाइयो को एकाकार करो
रोशनी के लिए सघप म
उत्पीडन का समूचा वेग लिए
घुटेगा आखिर किनारा
ज्वार की ओर बढ़ते चलो
बढते चलो
किनारे आप ढूढेंगे तुम्ह
द्वीप नये बसायेंगे तुम्ह,

∧

आज का नकयुवक

सगीता झा

अमावस्या म अनत अधकार सा,
गहन अधकारमय भविष्य।
किसी लाचार अपाहिज सा,
लगडाता वतमान।
बीत सुनहरे स्वप्न-सा
सुखदाई भूत।
इन सब म दबता पिसता निराश
नेत्रहीना सा टटोलता अपनी मजिल,
अपना घर।
कब तक यू ही चलता रहेगा दिशाहीन
आज का यह नवयुवक।
देश का कणधार।
आखिर
कब तक देखता रहगा? झूठे स्वप्न।
कब तक टटोलता रहेगा? दिल मे जख्म।
देश का यह भावी भाग्य विधाता।
आखिर कब तक?

Λ

बाझ धरती की कोख से

अमृतसिंह पवार

बाझ धरती की कोख से
जब एक बीज
फूट निकले तो
समझना

अब अवश्य एक
भीमकाय वृक्ष जन्म लेगा।
वह लहरायेगा
उसके पत्तो म हरियाली होगी
उसकी डालो के फूलो मे
खुशबू और फलो मे
रस होगा
तब वह बाझ नही होगी।

∧

शिक्षक की परिभाषा

अहमद रशीद 'मसूरी'

ज्ञान का दीप प्रज्वलित करता।
शिशु रूपी पौधे को—
सीच सीचकर—
एक फलदार वृक्ष उगाता।
शिष्टाचार क्षमाशील व कर्मयोगी—
स्वतन्त्र राष्ट्र म कहलाता।
सारा जीवन गरीबी एव
कष्टो म बिताता—
इस युग म—ईश्वर ही है।
जिसका रक्षक।
उसको कहते हैं—
शिक्षक।

∧

गीत

त्रिलोक शर्मा

बचपन की भोली बोली सा भोला मेरा गाव,
सोने जैसी धूप है जहा पर चदन जैसी छाव।

शहरो के दिल म पलत हैं नफरत भरे विचार,
यहा गाव मे अब भी चलता प्रेम भरा व्यवहार,
होली, ईद, दिवाली होती एक साथ हर ठाव।

धोखा और धुआ नगरो के आभूपण कहलाते,
मगर गाव मे आपस मे ही सुख-दु ख बट जाते,
यहा नही जमने पाये हैं घृणा, द्वेष के पाव।

तुलसी की चौपाई म हल हात कठिन सवाल,
मगर शहर म कोट कचहरी क ह खडे बवाल,
सीधी-सादी राह हमारी यहा न टेढ दाव।

खेतो मे अलगाजा बोले पनघट पर गागरिया,
घूघट घूघट नयना नाचे पग-पग पर झाझरिया,
माटी के सालह श्रृगार की शोभा हर दम गाऊ।



भारत माता

पुष्पा तिवाड़ी

भारत माता सुत हम तेरे, करते बारम्बार नमन।
तेरी चरण धूलि का हम सब, माथे लगा करें वदन।।

हम गर्व है मातृभूमि पर,
जिसने हमको जन्म दिया।
आज दिखा देंगे हम उनको,
जिसने मां पर वार किया।
कर्मों के योगी हैं हम सब, कहलाते तेरे मोहन।
भारत माता सुत हम तेरे करते बारम्बार नमन।।

मातृभूमि की रक्षा खातिर
कर देंगे हम सभी समर्पण।
प्राणों से प्यारी धरती पर,
तन, मन, धन कर देंगे अर्पण।
शस्य श्यामला के हर कण में बिछा दिये हैं मधुर सुमन
भारत माता सुत हम तेरे, करते बारम्बार नमन।

भारत माता के चरणों में
शीश झुकाकर करें वन्दना।
हर तन में ऐसा बल भर दो,
रिपु का हम सब करें सामना।
वीरों की इस पावन भू पर, खिला दिये तुमने उपव
भारत माता सुत हम तेरे, करते बारम्बार नमन

Λ

गजल

कुंदन सिंह सजल

जब कभी तेरी गली से लौटकर आते हैं, लो
बेवफाई बेरुखी की बात दोहराते है लोग

सत्य की ऊंचाइयों में आजकल यह सत्य
सत्य को भी सत्य कहने से कतराते हैं, लो

फैलने को है खुला आकाश है चारों दिश
अपनी करतूतों से लेकिन खुद सिमट जाते हैं,

एक युग था जब बदलती थी जमाने की हवा—
अब हवा बदले न बदले, खुद बदल जाते है, लोग ।।

खुद दुखी हो तो करे उम्मीद कोई साथ दे—
दूसरो का दुख कहा लेकिन समझ पाते है, लोग ।।

साधने को स्वार्थ अपनी कामनाओ के लिए—
तोडकर इसानियत की हद गुजर जाते हैं, लोग ।।

दोस्ती तक, बेहयाई से 'सजल' परिचय बढा—
अब कहा इसान की मानिंद शरमाते है, लोग ।।

∧

गजल

टूटते हैं जब कभी विश्वास मेरे।
स्वाब तक आते नही है पास मेरे ।।
बारहा आकर भुलावे मे जमी के—
खो गये अक्सर कही आकाश मेरे ।।
जब कभी भूगोल ने बदलाव ओढा—
डगमगाकर रह गये इतिहास मेरे ।।
अब सुकू देती नही आकर बहारें—
मौन हैं कुछ सोचकर मधुमास मेर ।।
चाद ने इतना छला है चांदनी से—
अब मुखर होते नही वातास मेरे ।।
प्यार से लगकर गले महगाई बोली—
आप ही तो आदमी हैं खास मेरे ।।
रग लाएगी प्रतीक्षा की प्रथाए—
आस से बधने लगे अहसास मरे ।।

∧

गजल

गुलाम मोहियूद्दीन माहिर

बुरा या भला हो मताना बुरा है
किसी के भी दिल का दुखाना बुरा है
फलाना बुरा है फलाना बुरा है
किसी पर ये तोहमत लगाना बुरा है
जरा सोचकर पाव घर से निकालो
जमाना बुरा है जमाना बुरा है
जहां रात दिन बिजलिया कौंधती हो
वहा आशियाना बनाना बुरा है,
रहे याद तुझको सदा दोस्ती मे
के कमजफ से दोस्ताना बुरा है
हकीकत को अपनी छुपाने के खातिर
किसी की कसम झूठी खाना बुरा है।
तुझे काई देखे तू नजरें चुराये
किसी के यू अरमा मिटाना बुरा है
रहे काई खामोश आखिर कहा तक
सितम पर सितम भी उठाना बुरा है
शराफत नही बुजदिली है सरासर
सजा बेगुनाही की पाना बुरा है।
जिम देखकर दूसरे बदगुमा हो
खुशी म भी यू मुस्कुराना बुरा है।
ये दावा हैमेरा ना कुछ होगा हासिल
कोई हो गम दिल बनाना बुरा है।
कोई लाख चाह वहा भी ऐंयमाहिर
मगर रोज का आना जाना बुरा है।

Λ

गजल

सलीम खा फरीद

कौन से क्षण हो बवण्डर कौन जाने ?
पी गई सफरी समन्दर कौन जाने !!

हम जिसे बरसात कहते मुग्ध हो के—
या कि रोया हो पुरन्दर कौन जाने ।।

एश की तश्त में तब्दिल होइए मत—
आएगा गजनी सिकन्दर कौन जाने ।।

मैं सदा हसती नदी सा ही दिखूं हूं—
वेदना के सिन्धु अन्दर कौन जाने ।।

Λ

यह धरा तो हम सभी की

ओमप्रकाश सारस्वत

देखकर मधुपव को भी,
मन मेरा क्यों रो रहा है,
क्या कहूं किससे कहूं—
इस दश म क्या हो रहा है ।

नित, नये हिमाचरण स,
आज मा अपनी प्रकम्पित,
आज सब सम्बन्ध पीडित—
आज 'भाई' शब्द शकित ।

जिस गगन ने इस धरा का,
देव विपदा से उबारा,
खून मे उसको नहाया—
देख, नभ टूटा विचारा।

आग का दरिया घृणा है,
प्यार सावन की फुहारें,
नफरतें काटे चुभाती—
प्यार लाता है बहारे।

इसलिए मैं' को मिटादे,
यह धरा तो हम सभी की,
फूल सबके, खुशबुएं भी—
और यह शबनम सभी की।

यह घृणा दिल काट देगी,
आख मे बाधा बनेगी,
प्रेम की धारा पलटकर—
कृष्ण की राधा बनगी।

^

आख का शहतीर

जनक राज पारीक

लिख मरे वरागी मन
समय के श्वेत-पत्र पर
एक श-ं हीन गीत,
एक स्वर-हीन चीख लिख
कि शब्द अपनी अर्थवत्ता खो चुके हैं
स्वर-सवाहक वायु तरगें

नजर बन्द है,
तरी अन्तहीन उडान के लिए
आकाश नही है
और तू जानता ह
कि अनवरत समाधि के लिए
तरे पास अवकाश नहीं है
इसलिए
एक कण भेदी मौन
एक मम भेदी पीर लिख
दष्टियो पर राज रोग
लग गये जिनके
उनके लिए
आख का शहतीर लिख।

∧

मौसम को बदलना होगा

हरिओम कुमार शर्मा

प्रारभ म लगता है
आकाश मे धुआ चढने लगा है
पवत की कोख से उगन लग हैं
जगली पौधे—
और मौसम जैसे किसी
बिना बुलाय मेहमान की तरह आकर बैठ गया है
घर की देहलीज पर
धीरे धीरे मौसम उगलन लगता है आक्रोश
आदमी/पशु/और फसल पर छोड जाता है
एक कपकपाती/चुलमती/जकडन/
अमरबेल की तरह अधर लटकते हुए
इस मौसम को/बदलना होगा

किसी महासूय द्वारा/
जिसने यह किसी गरीब झापडी मे घुमकर
तबाही न कर सके।
और बारूद उगलने के बजाय
उगल सके खुशिया के कमल।
जिससे वातावरण गधियाता रहे
एक अरसे तक
एक अन्तराल तक
हमे इतजार ह उस दिन की
जब यह मौसम परिवतन
एक नया उत्साह
एक अजूबा आनद देगा।

^

लिखो तो आदमी लिखो

कैलाश मनहर

मत लिखो दु ख,
मत लिखो सुख।
दद मत लिखो,
चन मत लिखो।

आशा, निराशा, खुशी या उदासी
मत लिखो पतझड या बसत,
लडका या लडकी,
किताब या कलम,
पक्ष या विपक्ष
धम या अधम।

मत लिखो, रात या अंधेरा,
मत लिखो सूरज या सवेरा।
पर लिखो,
लिखना जरूरी हो, तो लिखो।
आत्म स्वीकृति हो, तो लिखो।

लिखो, साहस,
शक्ति, लिखो,
लिखो धैर्य
संताप लिखो।
लिखो, लिखो, खूब लिखो,
लिख सकते हो, तो आदमी लिखो।

∧

अनुभूति

पुष्पा रघु

एक
देखा है कभी ?
सूनी बियावान बंजर उजाड़
जमीन को ??
युगों से आंख फाड़े
बूंद बूंद को तरसती
उसकी चटकी हुई छाती पर
भूला भटका कोई ठूंठ
ढह गया जो गर्त में
ऊपर को उठी उसकी शाखाएं
दया ताड़ती मुफलिस इंसान की
हथेलियों की तरह

खुली ही रहती हैं
आखिरी उम्मीद मे
शायद कोई चमत्कार हो जाय ! ! !

दो

सुना है कभी ?
अपने नन्हो के लिय चुग्गा ले जाती
मासूम चिडिया के
कफस मे फसकर
छटपटाते तडफडाते रुदन को ??
लोग करुणा क्रन्दन को
सराहते है समझ गीत
देकर अगूर दाख
उसको नवाजते
खा कहा पाती है
ध्यान कर खुली चोचो का !
घुट जाए आवाज
उसस पहले दुआ मागती है—
पूरी सासो के साथ
जाने दो मुझे !
दिल के टुकडो के पास ! ! !

तीन

महसूसा है कभी ?
उस घुटन घुटन का
किसी छाती में जा
गुजरता है जब

एक भला चगा मानुष
धुआ धुआ हो जाता,
जो था कभी
जिंदा उमग से भरा
सीधा सादा,
गलत समझ उस
जब दुरदुराया जाता ह
मब रिश्ते-नात
प्यार आ 'रगीनिया
झुलम डालत ह
बनकर चिगारिया
वजूद तब उठता है जल
दौडना पान निजात—
और भी भडक उठती आग
रह जाती है बस —
एक मुट्ठी राख।

Λ

समदर

प्रेम प्रकाश व्यास

दोस्त!
अनुभवा का नीला समदर
और उस पर यह तरती सवेदना की नौका,
कभी कभी ता नगता ही नही है कि
इन सभी धाराओं का यह सह पाएगी,
पर है बदस्तूर टिकी हुई यह भी
ठडे नम्बे रास्ता के पार,
या कि चादनी मे सुनसान सडका पर चलत,

आज हुए मन्द धा क धाग
अब भी इस कदर उलझ ह,
कि न ता दाता स खुलत ह न हाथो स।
और उलझना के गुच्छा को हाथो म सभालें हम,
खुशी का एक नकली समदर बनात ह।
नीला।
इसम तैरात ह य
नौकाए और खुश हात ह,
य डूबती क्या नही ?
भला पत्थर की मूरता की हसी
राने म कभी बदली ह।

∧

जीवन नाम नही जीने का

गिरवर प्रसाद बिस्सा

हुक्त जा पुरपाथ सामने
भाग्य भाग्य व चिलात है।
बिन पारुष क भाग्य न फलता
व दर दर भटक खात ह॥

अपन निज का भाग्य विधाता
हर मानव ही बन सकता हैं।
कम कर रह मरे साथी
पौरुष न विधि का जीता है॥

भाग्य हमारी मजिल है, तो
पारुष ही मग कहलायगा।
माप सक जा नही राह को
पुरुष नही वह कहलायगा॥

जीवन नाम नहीं जीने का,
जीते पशु पक्षी मार है।
जो पुरुषार्थ करे जीवन मे
महापुरुष वे है॥

भाग्य और पुरुषार्थ बने ह,
प्राण चक्र के दो आयाम
स्वस्थ पुरुष वे जाने जाते
जो करते श्रम का व्यायाम॥

जीवन मरण सदा विधि के वश
नही कभी चिन्ता की बात।
जीवन को पुरुषार्थ बनाए
इसम विधि का क्या है साथ॥

Λ

अतर का अनुराग चाहिए

योगेन्द्र सिंह भाटी 'योगी'

अभिशापो म शापित जन को
पावन मन का प्यार चाहिए
घोर अधेरे म भटके को
आशा का उजियार चाहिए
जडताओ से त्रस्त मनुज को
चिर चैतन्य चिराग चाहिए।
अतर का अनुराग चाहिए॥

जिसके पथ म काट ही हो
फूलो का उपहार चाहिए
कुठाओ म कुठित मन को
मन का मधुर दुलार चाहिए
ऊब चुका जो अध तिमिर से
उसको राग विराग चाहिए।
अतर का अनुराग चाहिए॥

खोले जो अतर की आखें
ऐसा नव आलोक चाहिए
खोल सके जो मन की पाखें
ऐसा पावन लोक चाहिए
तोडे जो सशय की कारा
वह विश्वासी राग चाहिए।
अतर का अनुराग चाहिए॥

मझधारा के माझी को तो
तट का सुदर ओक चाहिए
डूब रहा हो जो जीवन म
तिनके का सजोग चाहिए
पीडित मानवता को 'योगी'
स्नेहिल मन बेदाग चाहिए।
अतर का अनुराग चाहिए॥

∧

आज हमारे युवा मात्र सम्पाती

हरिश्चन्द्र सेन

यदि अतीत का पुन युवा, मर दोहराले,
धूमिल पद चिह्ना की माटी पुन हटाल ।
नई दिशा को राह मिलेगी सदा प्रकृति से,
सभव होगा मिलन पुरुष का सद्य विकृति से ॥

अधुनातन से नही रहा है, हेय पुरातन,
गौरव जिसन दिया बडा का छोटा आनन ।
अमर पुरातन सदा रहा, अभिराम सुसागर
कुठाओ से शून्य छिपा ह नही, उजागर ॥

इस युवा अपरिचित, अधकार म क्या है डूबा,
आत्राशित, सन्तापित मन से, प्यासा भूखा ।
विकट समय ह, मानव को मानव ही खाये,
अन्तरिक्ष म बैठ मत्यु का, भय दिखलाये ॥

अन्तरिक्ष शोधन ह नही व्रज का तोडन,
रुख बदलाव हवा का, नही पथा का मोडन ।
नही भौतिकी ज्ञान, हमारा बढ पाया है,
हमने ता केवल अतीत को दोहराया है ॥

सौर परीक्षण म सम्पाती, दखो हारा,
सौर क्षेत्र पथ म ही जला तेज का मारा ।
अध कच्चे हैं आज हमारे य सम्पाती
अपने मद म चूर बन रहे आत्म निपाती ॥

खुला आवरण रहे, पापो को डेरा मत दो,
मानवता के लिए समर्पित, जीवन कर दो ।
एसा अपना ध्येय आज के युवक बनाले
धूमिल पद चिह्ना की माटी पुन हटाल ।
नई दिशा को राह मिलेगा, सदा प्रकृति से,
सम्भव होगा मिलन, पुरुष का सद्य विकृति स ॥

आओ

भागीरथ भार्गव

आओ, आऽ ओ ऽऽ आ ऽऽऽ ओ
अरावली की इन पहाड़ियों म आओ
इन सर्पीली घाटियों ये
इन तग गलियारा म आओ
पहाड़ी पर बिछे इस कार्पेट की
शीतलता मे रम जाओ
यहा अब भी झरन-सी
निरन्तर झरती है खिलखिलाहट
फिर उसकी गूज अनुगूज
समूची घाटी म बस बस जाती है।

आओ, आऽ ओ ऽऽ आ ऽऽऽ ओ
सरपट दौड़ती सीटी बजाती
अनुराग भरे गीत गाती
बसुध, पगली हवा तलाशती है
वही वही वही गध।
मौन य बडबेरिया लाल लाल
उघते है ये झाड, ये गाछ
पपडाय होठो से करते है बात,
जाने कहा ? जाने कहा ?
अब वह कहा ?
वही-वही वही गध।

आओ, आऽ आ आ‿ ओ
उगते सूरज से आखें लडाओ
झील मे गिरते सूरज से रगाओ
छोड गया जो बिंदिया—
क्षितिज पर वह
माथ पर उसे सजाओ।

लो कजरारे मघा आये हैं
नीली झील पर छाये हैं
गोरे तन को बचाओ
सब भीग भीग जायेगा
समूचा तन दरस जायगा
मन उमग उमग
सरस-परस पायगा।

आओ, फिर आओ।
सारा वन प्रान्तर—समूचा गिरि अन्तर
देता तुम्हें खुला निमन्त्रण
आओ, फिर फिर आओ
बार-बार आओ
उन्मुक्त प्रकृति की हरीतिमा में
छिप छिप जाओ
गीत प्रीत के गाओ।
आओ, आ ऽ ओ, आ ऽऽऽ ओ।

∧

ओ बन्दे! जीना है अविराम

बुलाकीदास 'बावरा'

तेरा जग तुझको निहारता पग पग तेरा पथ बुहारता।
अपने को पहिचान ओ बन्दे! जीना है अविराम ओ बंदे।

तेरा सूरज तुझमें रमता।
तेरा चन्दा तुझसे बनता।
रंग बिरंगे चित्र अनेका।
तेरा रूप तुझी से बनता,
विचर रहे तेरी सीमा में भोर दुपहरी, शाम।
ओ बन्दे! जीना है अविराम॥

तू कारण है अपनेपन का,
तू जीवन है धरा गगन का
तेरे फन का तू ही माहिर—
तू ताना है तीन भुवन का,
तीन गुणों के इन रेशों में, तेरा रूप तमाम।
ओ बंदे ! जीना है अविराम ॥

तेरी आभा तुझे सवारे
ज्योतिमय ओ जग के द्वारे,
तू अपनी आवाज स्वयं है—
तेरी सृष्टि तुझे पुकारे,
झांक स्वयं में एक बार, तू चिर चिंतन संग्राम।
ओ बंदे ! जीना है अविराम ॥

तू जो भी निष्कर्ष निकाले,
बाह्य जगत बस उसको ढाले,
भीतर बाहर का सेतु बन—
एक बार संकोच हटा ले,
मर कर भी तू मरा भला कब मृत्युञ्जय सुखधाम।
ओ बंदे ! जीना है अविराम ॥

∧

पृथ्वी से संवाद

नारायण कृष्ण 'अकेला'

फिर खिल उठा है अमलतास
अपराजित महत्वाकांक्षा से आप्लावित
अग्निधर्मा
स्वर्णिम आभा से पुलकित
प्रमुदित

फूल पत्ती-टहनी—
अनन्त दीप्ति स आलोकित
पृथ्वी !
क्या इसी तरह
तुम करती हो शृगार ?
छेडती हो निजन म
मन मोहनी सितार ?
दूधिया चादनी म नहाती हो !
निज छवि पर
रीझ रीझ जाती हो।
यू ऋतुए आती है
फूलो स सजाती हैं तुम्ह
तुम रूप गर्विता
अप्सरा-सी
प्रतीक्षारत
कब से खडी हो
अपनी जिद पर
अडी हो !

∧

धुआ

जगदीश प्रसाद आचाय

कभी कभी
अथवा
प्राय औपचारिकतावश
या
स्वभावत
शब्दो स निर्मित
परिभाषाओ से बधी

अर्थों की अर्थी
समझ की चिता पर
अनुभव की अग्नि म
जलकर इस तरह—
'जीवन' का 'धुआ' दने लगती है
जैस—
अतीत की सूखी लकडी स बना
वतमान का बुरादा
भविष्य की जलती हुई
भट्ठी मे डालने पर
'समय का 'धुआ देता है।

Λ

दस जोडे
रघुनाथ बतरा

जावन तन का बोझ रही बस उखडी उखडी सास।
काटा उलझा, निकल न पाइ बडी नुकीली फास ।।

दद द रह सभी सितारे, चाद खडा हे मौन।
सूरज के समानान्तर पर भला चलेगा कौन ।।

भरा समुन्दर सोच रहा है—तूफाना के बीज।
नदी उफनती बल खाती सी, गइ उसी पर रीझ ।।

जम हुए हैं इस माटी पर उसी बूट के पर।
सौ पहरा म भी जो दुनिया की कर आया सर ।।

सत्य कबाडी के खाख म बेच रहा ईमान।
उसकी हत्या का पहले स, सजा हुआ सामान ।।

फनक प चाद चमकता ह एक सब के लिय।
वा आफताब दमकता है एक सब क लिए।
घटाये दती है पैगाम सबकी खिदमत का॥

हमार मुल्क म गाधी हुए ह गौतम भी।
हजारो पीर हुए है कइ पयम्बर भी।
सभी ने प्यार से दखा है खेल कुदरत का॥

न काई मदिरो मस्जिद म फक फर्माए।
न काई गिरजा घरों गुरुद्वारे स अलग जाय।
सभी के पीन का पानी हो एक पनघट का।
इसे सवक न सिखाओ किसी से नफरत का॥

Λ

गजल

ब्रजभूषण चतुर्वेदी 'ब्रजेश'

इन्सानियत है धम अपना और हम इसान है।
बाद मे हिदू इसाई सिक्ख, मुसलमान है।

ह इवादत के अनका ढग, दुनिया म मगर—
'प्यार ही है खास जिसमे वस रहे भगवान है।

लूट हत्या और डक्ती, खेल ह इनके लिए—
न उनका कुछ धम है और न काई ईमान है।

वेगुनाहा के लहू स हाय है जिनके रग—
धम क दुश्मन हैं वे इन्सा नही शतान हैं।

[illegible] [illegible] इतिहास और [illegible] वन—
गुफा के स्थान हैं या दुःख के [illegible] है।

हिंसा और आतंक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]—
कलियाँ बन आयेंगी, मुस्कान वर्तमान है।

पर्यावरण और सृजन

शारदा कुमारी भटनागर

नूतन पर्यावरण के दौर से गुजर कर भी,
जो अपने मानवीय गुणों को
अपरिवर्तित रख सके
तथा पर्यावरण की कठोर वास्तविकताओं पर
अपनी सही प्रतिक्रिया अभिव्यक्त करके उसको
शुद्ध एवं सशक्त रूप
प्रदान करने की क्षमता रखता हो
क्योंकि अधिकतर पर्यावरण में
हर आवाज में,
शोर या शोर भरा
पूरा ही है
और समाज में
इन अभिजात स्वरों द्वारा ही
किसी भी युग को
पूरा एवं आधुनिक,
बनाया जा सकता है।

∧

रट्ठ गरत

जगदीश गत

हजारों हजार वर्ष
[illegible] और [illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

प्रकाश का 'अभाव' ही रहने देने के लिए
नाद का/अनाद के विरुद्ध
प्रमाण प्रस्तुत करना पड़ता है।
अब व्यक्तिगत शब्द
अनाद को हराता है
प्रमाण प्रस्तुत करने में/असमर्थ रहता है।
ऐसी स्थिति में —
[illegible]
[illegible] है।
[illegible]—
[illegible] है।

Λ

मुस्कात रंग
पायल मन में उठती उमंग
सब धरे रह गये
जीवन का पनघट
प्यासा पपीहा
मन की तड़पन
ज्यों-की-त्यों रही
रह जाएगी
गायनी है
मेरे मन में मगन
जाग-ती जीवन की सौगातें
सब अधूरी रह जायगी
प्यार भरी सौगातें।
पी पा करत थाम
पपीहे की छटपटाहट
या फिर
कुलबुलाहट
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]

[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] है या
[illegible] है।

गाय

[illegible]
[illegible] है कि —
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] और
[illegible]।
[illegible] है कि —
[illegible]
[illegible] और
[illegible]।
[illegible] है कि —
[illegible]
[illegible] और
[illegible]
[illegible]
[illegible]।

एक प्रतीक्षा

रमेश चन्द्र उपाध्याय

आख म आशा जगाए, अनमने-से
द्वार मेर ह खुले
ओ प्रगति किरणें कभी तो
आलाकित करो, मर आगन द्वार भी !

जनतन्त्र को छाती लगा
फिर सो गइ जन-चेतना,
तृण-तमा से घिरा झापड
जागती बस वेदना !

और इस झोपड के कोन म पडे
इक बुझे से दीप हम
ओ रोशनी की शृखलाओ,
कभी तो बनो, मरी बादनवार भी !

काफिले कारा के गुजरे
राजपथ बन गया फुटपाथ भी
बिखरी झोपडी—बिखरी बल्लिया
दिखाती बेबसी के हाथ भी !
आख मे सपने समेटे
इक गठरी लेकर हम खडे,
ओ गुजरते लद वाहन
कभी तो रुको, मेरे सूने द्वार भी !

चाह मे मधुमास की
हम पतझर म पडे हैं आज भी !
जनतन्त्र के प्रतीक बनकर
भर रह हैं ब्याज भी !

अट्टालिकाओ की सभा म
गूगे से हम मुख्य श्रोता,

उग आये मेरे भीतर
ढेर सारे कैक्टस।
सवेदनायें सो गयी हैं
कैक्टसी लबादा ओढ़कर।

मेरे चारों ओर का
शोर नही जगा पाता है मुझे।
मेरे ही भीतर उपजे
एक महाशून्य-से खिंचे
सन्नाटे से मैं ऊब
गया हू।

वक्त, मौसम और बदलाव
से बेखबर मैं—कभी-कभी
महसूसता हू स्वय को ही
एक शिला लेख भग्न सा
जिसे कोई नही पढ पाता
मैं स्वय भी नही।

∧

दर्पण और अक्स

बहुत पत्थर फेंक लिए
उसने मुझ पर
और थक जाने के बाद
मुडेर पर बैठ गया बेबस।

मैंने कराहते हुए पूछा—
बस या कुछ और भी?
वो बोला—

दास्ती म सब चलता है
और फिर मैं ता
तुम्हारा शुभचिन्तक हू ।

/ Λ

प्रौढ शिक्षा

मोहन लाल जोशी,

क्या तुम नही जानत ?
कि—तुम कुछ बन जाओ,
कि तुम कुछ समझ जाओ ।
कि तुम कुछ हो जाओ,
कि कुछ सीख जाओ ।।

क्या तुम नही चाहत ?
कि कुछ पढ जाओ
कि कुछ लिख जाओ ।
कि कुछ सीख जाओ
कि कुछ बन जाओ ।।

यह कोई मुश्किल काम नही
यह कोई मुश्किल जाल नही
यह काई मुश्किल सौदा नही ।

चार अक्षर आराम मे सीख सको ।
चार अक्षर आराम से पढ सको ।
चार अक्षर आराम से समझ सको ।
यह कोई मुश्किल नही ।
इस मरहम को नही जानते
यही मुश्किल है ।

कुछ अगर सीखोगे
अपना आप खुद कर लोगे
अपना हिसाब खुद कर लोगे,
अपना हिसाब खुद लिख लोगे,
अपनी कथा खुद पढ़ लोगे,
अपनी बरबादी से बच जाओगे।
क्या ! तुम नहीं चाहते ?

कहानी किस्सा, लिखना-पढ़ना,
साफ-सफाई, अपनी बात, आप समझना ।।

अपना वजन, अपनी लम्बाई,
घर आंगन की लम्ब चौड़ाई
किलो क्विंटल, दाद दवाई,
छोटी मोटी, खाज-बीमारी,
बस रेलों की समय सारणी,
रेडियो-नाटक लोग लुगाई,
भाषा भाभी की चतुराई,

मानो तो सीख सदा ही,
कुछ न कुछ तो पढ़ लो भाई,
करलो विचार करलो वादा
झट-पट पट्टी पकड़ो यार,
जल्दी हो जाओ तयार ।।

∧

जीवन पूछे प्रश्न

जितेन्द्र

जीवन पूछे प्रश्न
स्मृति देती उत्तर

चेतना चुप रह जाती है।
स्मृति के उत्तर यान्त्रिक है
जीवन रोज बदल जाता है
कल के उत्तर आज नही देते हे काम
और हमारे पास सिर्फ कल के उत्तर हैं।
सीखे हुए उत्तरों को एकत्रित कर
लगी हुई हैं यहा दुकानें
जिन पर बिकते हैं उत्तर शास्त्रों के
जीर्ण शीर्ण सिद्धातो के
सडी गली परम्पराओ के
हजारो वर्षों की जडता के उत्तर लेकर
जीवन के सम्मुख हम हो जाते खडे
और उधर जीवन है कि रोज बदल जाता है
हम देते है दोष उसे
जब कि स्वय की जडता ही असली दोषी है।
जहा कही जीवन है—वही है चाचल्य भी
वही गति है वही क्रान्ति है
वहा प्रति क्षण सभी नया है।
अत छोडना होगा विगत मान्यताओ को
और भूलने होंगे सब उत्तर उधार के,
हम सक्षम बनना होगा अब इतना
कि जीवन पूछे प्रश्न
तो हम स्मृति को चुप कर दें
और चेतना खोजे उन प्रश्नो के उत्तर।

Λ

मत करो

भूपेन्द्र "तनिक"

मेरे खुरदरेपन पर
अब कैक्टस ही उग सकता है

गुलाब की कलम लगाने का प्रयास
मत करो मत करो मत करो
किसी अगस्त्य ने मेरे लहलहाते
सागर को सोख लिया है
तमाम की तमाम मछलियां मचल कर

मर चुकी हैं
और
भूल चुके हैं कछुए
ढाल से बाहर
चेहरा निकालने का अभ्यास
सूरज से रोशनी उधार लेकर
चमकने का काम चान्द ने बंद कर दिया है,

अहमवश
इसीलिये मुर्झाकर मिट चुके हैं
कुमुदिनी के सब के सब पुष्प
मेरे सूखे सागर में, कहीं से कीचड लाकर
कमल उगाने का काम मत करो मत करो मत करो

∧

मेरी अपनी आवाज

जितेन्द्र

यदि तुम नई धरतियां तोडना चाहते हो
नये आकाश खोजना चाहते हो
नये पाताल फोडना चाहते हो
यदि तुम्हें नये सूर्य से आंख मिलानी है

तो प्रवंचक अकर्मण्यताओं का
परम्परागत वंचनाओं को

तिलांजलि देनी होगी
तुम्हे प्रज्ञा का, विवेक का वरदान मिला है

दूसरे बोलें और तुम उसे दोहराओ
क्या यह अपमान जनक नही है ?
कहा गई तुम्हारी मेधा
कहां खो गई तुम्हारी गरिमा ?
क्या तुम बिलकुल प्रतिभा शून्य हो

श्री हीन हो ?
क्या तुम्हारे भीतर स कोई अनुभूति नही आती
जिसे तुम कह सको कि यह मेरी है
इसे मैं किसी स सुनकर नही दोहरा रहा हू

यह किसी और की आवाज नही है
यह मेरी अपनी आवाज है
क्योकि यह मेरे भीतर से आ रही ह
मेरे प्राणो से यह फूल निकला ह ।

∧

अहम् का दश

रामनिवास सोनी

सदियो से मुझे बांध रखा है
उसने,
अपने फौलादी शिकजे म ।
मैं उन्मुक्त यायावर की तरह
चाहता हू जीना ।
सहज अभिव्यक्ति
निग्रथ मन
मेरे सार्थक अस्तित्व के उपादान हैं ।

मैं टूटा
अपन होन के बौने अहसास से—
बिखरा
काच की तरह—
पारदर्शी महल की चौखट स गिरा,
उठा कई बार
फिर फिर गिरा।
अपनेपन की तज सुरा पीकर
बहका बहका फिरा युगा से।
सहस्रो विषैले बिच्छुआ के दश से घायल
मरा अवचेतन मन
छटपटाहट क कगार स पुन लौट आया।
चाहता हू एक निस्पद, निर्व्याज जीवन
उन्मुक्त मानस गगन।
और
उन जजीरा को तोड दना चाहता हू
जिनमे बधा है
मेरा आक्रोश भरा दद।
मरी समग्र कामनाए तिरोहित हो जाए
जिनका म क्रीतदास रहा—आकठ।
मेरी व नवती चेतना को मिले
सही पथ—सही अथ।
कृत्रिमता का मुखौटा उतार फक
आ पगलाए मन।
अभी तो खतरा है, जागरण की वला है।

∧

सरसो

रमेश कुमार वर्मा

फागुन की सरसा
पीली-पीली चितवन,

भवरे की गुजन
गहू की वालिया

सरसा की वालिया
झूम रही खेता म,
लाल-पीली साडिया
पहने कुवारिया

हाथो म कगन
गीत गाती मगल
सरसो ही सरसा
पीली पीली सरसा

दिल का बहलाती
मन का सहलाती
झूम रही सरसा
फाल्गुन की सरसो।

∧

मौन चेतना

श्रीमाली श्रीवल्लभ घोष

कौन सुने ?
किसस कहू ?
और

सुन तो समझ कौन ?
बाबा गाधी कह गय
सबस बडा है मौन।

वेदना के इन क्षणों में
जी रहा हूँ—मैं ।

चारों ओर
घुटा घुटा-सा,
उमसाया सा,
फिर भी
अपनी बोझिल
जिंदगी के भार को
ढोए जा रहा हूँ—मैं ।

फिर एक आवाज
कहीं दूर—क्षितिज पर
सुनाई पड़ती है
जो, मन वीणा के तारों को,
छेड़ कर जगाती है—तब ।

चुप मत बैठ
हाथ पर हाथ मत रख
निर्धूम भुस की नाईं
मत सुलग अंतस में ।
फूट पड़,
प्रज्वलित ज्वालामुखी बन

और
हिलादे सारी धरती को
आलम अपने आप
बदल जायेगा
सोया भाग्य, अपने आप
जाग जायेगा ।

प्रतीक्षा

दीपचन्द सुथार

चिलचिलाती धूप म
अपने शिशु का
झाडिया की छाया म
झूले मे सुलाकर

भूखी प्यासी व्यस्त हो गई
पत्थर ताड-तोड
ककरी बनान म।
रोत दख—

त्वरित
स्नेह वश छाती स लगा
जीण शीण साटी स ढका
स्तनपान करा दती।
कसी विडम्बना है, कि—

यौवनावस्था म ही
विधाता ने
उसक सिर का सिदूर छीन लिया
अतस का वसन्त
अचानक—

पतझड म परिवर्तित कर दिया।
अपने कहे जाने वाले
सिफ नमक छिडक रहे हैं

फिर भी अपन का बचाती
पग पग की परशानिया सहन करती
बठी हैं
उस डगर पर कि—

आशाओ का चाद उदय होकर
कल के सुनहले स्वप्नो को—
मुखरित करेगा।

Λ

समत्व भाव ?

वासु आचार्य

बहुत कुरेदने से भी
नही मिल पाता
वह बिन्दु

सवेदना के अनुभव जगत म
जहा हम
खम ठोक कर कुछ सके
या कि हसते हसते
हर क्षण सह सक

पूरी की पूरी जमीन
या कि आकाश
सिमट आता है
किसी हौले हौले
चलती लहर की तरह

और वही क्षण—
क्यो फिर फूट पडना चाहता है
किसी ज्वालामुखी की तरह
आग ही आग

लावा ही लावा
कीचड ही कीचड

आखिर सच क्या है ?
ठडी होले-होले चलती लहर
तज आग उगलता लावा

मैं दोनों ही दशा म
भाग रहा होता हू
हाफता पसीना पसीना हुआ
चाहता हू
पैदा करना
'गीता' का समत्व भाव

चाहता हू
धूल के कणो की तरह
हवा म तैरना
सब तरफ से निरपेक्ष

किन्तु—ऐसा कुछ नही हो पाता

मैं अपने से ही
फिसल रहा होता हू

म अपने से ही

∧

आत्म बोध

कैलाश चतुर्वेदी

हम जीवित है ?
यह भ्रम

तुम्हारा हमारा नही
अवसर
सभी पाले हुए है
तुमने खरीदी है कभी
कोई चीज
या कभी बची भी होगी
अमूल्य जीवन धरोहर
नही खुद ही ता
नही बिक गय हो
जडे विश्वास की
गहरानी मी लगती हैं
खुद ही क्या
हम सभी तो बिक हैं
मुझे 'बिकना शब्द भी
रास नही आता
तभी बिकन पर
मरने' का मुलम्मा
चढाकर देखता हू
ता सौ टका सही लगता है
क्योकि
हम अपनी बुद्धि
अपनी प्रतिभा
अपनी शक्ति और कला
अपना विज्ञान
और अपना सम्पूण अस्तित्व ही
बेच दत है
या सौपकर मर जात है
फिर क्यो सडाध भर
खोखले अस्थिपजर के भूत का
ढोते आ रहे है
विक्रम-बेताल सा

∧

व्यूह कसने दो

जितेन्द्र शकर बजाड,

व्यूह कसने दो,
अभी तोडो नही ।

शब्द कुछ,
अब भी हवा मे उड रहे हैं
वे यही पर तो
तुम्ही से जुड रहे है ।
तुम न कुछ बोलो, नया जोडो नही

है अभी भी खूब पीलापन,
दिशाओं में ।
चीखते उल्लू हैं चुप,
साई निशाओ में ।
समय को पढ लो, यू ही छोडो नही

है खुले पृष्ठ अब तक,
मधुर यादो के ।
बन न जाए ग्रन्थ कल को,
फिर विषादो क ।
साथ कुछ चल लो, अभी दौडो नही

कौन बैठा है तिमिर बन,
भोर के आगे ।
चाह है कि सूर्य जीते,
और निशा भागे ।
पूब मे जाओ, कदम मोडो नही

∧

पेवन्द

सीता राम व्यास 'राहगीर'

आदमी
एक आदमी ह
वह वस्त्रो क भीतर मला है
यदा कदा !
भीतर का भण्डार खुलत ही
वर्षो से दबी गध
आग के धुए की तरह उठती है
धुआ उसका भीतरी अधेरा है
कभी कभी आदमी
अधेरे में अपने वस्त्रा पर
पबन्द लगाता
पेवन्द पेबन्द है
वह टूटने का जोडता है
इन सभी होने वाली परिक्रमा में
कभी इन्सान जीतता ह तो
कभी हारता भी है
मौका पा कर कभी
हाने वाने युद्ध से भागता है
रणछोड बनकर/फिर जीता है
यही आदमीयता है।

Λ

प्रेम

वीरेन्द्र कपूर

प्रेम का अथ
हृदय वस्तु के उद्दीपन से ह,
यह द्विआयामी, द्विअर्थी है
आन्तरिक और बाह्य,
बाह्य रूप में
दिलो को जोडने की
मात्र एक कडी है।

दो विपरीता को
समीप लाकर
एक सूत्र में पिरोने की
सुन्दर लडी है।

प्रेम,
शासको की शक्ति,
सदैव ही रही है
एक सम्राट ने अपनी आत्मजा को,
देकर
दूसरे की शक्ति का वधन किया,
इतिहास साक्षी है।

तभी वढी है साम्राज्य वधन की परम्परा
जा भूत म थी, अब भी वही है,
मात्र समीकरण म परिवतन हुआ है।

प्रेम,
सत्ता परिवतन के अमोघ मन्त्र,
नित्य और शाश्वत रहे हैं।
आज भी पद बढते हैं,

अपन स रगा में बहन वाले खूना म,
रक्त जा एहसास है पयाय है
राजवशा गमुगाया परिवारो का।

प्रेम का आ तरिक स्वरूप
म यन का ही प्रतीक है।
प्रेम इस अथ में,
विचारा और भावनाओ का मेल है
विचार के स्वरूप में
सघप को झेला है।

समानार्थी विचारो में,
एकता को ज म देकर,
विश्व चेतना से युक्त होकर,
"वसुधैव कुटुम्बकम' के सूत्र का,
ज म दिया है।

तभी तो
विश्व की पाशविकता का क्रमिक ह्रास,
और
सभ्यता का क्रमिक विकास हुआ है।
विचारो की विपरीतता मे
क्रा ति को ज म दिया है।

भावनाआ का स्वय का इतिहास है
भावनाए,
जब तक यक्तिपरक हैं
सब कुछ ठीक ठाक है,
भावनाए हठात बलवती होकर
निरकुश हाती है।

तभी,
मतैक्य की विभि नता में,

विचारा का टकराना,
व्यष्टि स समष्टि की ओर
अग्रसर होकर,
सवत्र व्याप्त की आकाशा
बलवान होकर,
खुद को थोपन की प्रवति म
जन्म होता है,
युद्ध का।

जो विनाश का प्रतीक है।
आज तक जितने युद्ध लडे गए,
सभी का उपादान,
महत्वाकाक्षा रगभेद, घृणा
विस्तारवादी त्रुटियुक्त नीतिया का,
एक मात्र परिणाम है।

घृणा से घृणा उपजती है
जो विनाश का प्रतीक है
फिर इस विनाश लीला में
प्रेम की लहर कहीं से
प्रस्फुटित होकर,
सकेत देती है,
सृजन का।

जो, जीवन के क्रमिक विकास का माग है,
इसलिए, घृणा त्याज्य है
और प्रेम स्वीकार है,
इसी का सदैव आह्वान है।

Λ

अधेरे से लडाई

सरला गुप्ता 'भूपे द्र'

हम सब फँसी अधी सुरग मे फम पडे हैं
घुप्प अधेरे म नथूने फुलात
दमघोटू अधेरा और हमने
खुद ही स्याह तल म अतहीन
स्याह सुरग के कपाटा के ताला की
चाबी सुपुर्द कर दी ह
रोशनी के आश्वासना के हाथा म

लो ढूढो अब पच पच मरो
लाख कोशिश करो वह हाथ नही आयगी
वो देखो धुधली मी आकृति म
निकल गया ह बहुत दूर
बहुत शुभेच्छु था वो पलभर पूव
वो दखो घुस रहा ह अपने प्रभामडल म
और निराकार है वो
उसका प्रभामडल हमे हाथ नही आयगा
अधकार यो ही गहरायगा

बको मत
अदद नथूने फुलाने से अधेरा नही छटता
बिलबिलाने से सबेरा नही रचता
रात को इतना स्याह बुना गया ह

भागो नही
हबडदबड म आपस म टकराओग
कुछ मरोग कुछ घायल हो जाओगे
लिहाजा दुबक जाओग
सहम जाओ और भाप लो

अधवार व ठेकेदार की तावत
खखार के माथ एक साथ हुकार दा

लेकिन तुम एसा नही करोग
खखार कर खिसिया जाओग
सबको दुबक्ता सुबक्ता पाओग
ऐसे मे अतहीन सुरग का
वरण कर चुक्त हो
आदतन अधेरा पीत हो
अधेरा उगलत हो

कैसी फितरत है अधेरा जी भर कर जीते हो
ऐस जीने पर सोच विचार नही है क्या
अधेर की बेडी काटने का
शेप कोई हथियार नही है क्या ?

∧

स्नेह और वदलता परिवेश

अजना भटनागर

विसगति के क्षण म
जब
कोई चुपचाप कधा थपथपाद,
जब किसी की आख
आत्मिक गहराई लिये कुछ ऐसा प्रगट करे

कि—
किसी के मन मे सैकडो गुलाब खिल उठे,

जब किसी के हाथ का स्पश
यह अहसास कराए

कि—
वह उसके साथ ह
हर अवस्था म ।
वह है स्नेह
ऐसा—

कि—
जिसका कोई मूल्य नही
जिसकी कोई भाषा नही
जिसे अनुभव किया जा सकता है बया नही

पर—
अब ऐसे सवेदनशील हाथ नही
जिसका स्पश, थपथपाहट सात्वना द सके
ना ही ह एसी आखे—

जिनकी तरलता मे डूबा जा सक
टूटे हुए परिवेश म
मग्न महत्वाकाक्षा को
कही कोइ नीड तो चाहिए ही

एक बैसाखी
उधार मागी स्नेह क्रोड का
जिसे पाकर
 यक्ति हा उठता है उत्फुल्ल

और—
आखो मे उग आत हैं
रगीन बासती गुलाब
लेकिन—

सभी तो मागी हुई हैं—
स्नेह क्रोड, उत्फुल्लता, वासती कल्पना।
तभी तो—

वसत
अजान ही
अपनी केंचुली याद छोडकर
चला जाता है मूलधन लेकर महत्वाकाक्षा के मोतियों का

और व्यक्ति
व्यतिक्रम के झटके से टूटकर
बिखर जाता है

और—
शब्द कोप म ढूढता है तीसर नत्र से
स्नेह क शब्द का अथ!

किन्तु—
मन कहता है
स्नेह
मौन, अव्यक्त अभिव्यक्ति है
अनत गहराई म बुनियाद लिए
कोई मुझे इसका अहसास करा दें।

∧

नफरत के बीज मत बोओ

ईश्वर लाल गारू 'दशक'

नफरत के बीज मत बाओ
इनसे हिंसा की फसलें उगेंगी—

और रक्तपात के खलिहान लगेंगे।
अगणित आखो से बहेंगे—
आसुओ के धार।
मानव के मसूबे ढह जायेगे सारे।
फिर श्रम के हाथो मे हसिया नही—
खजर होगे—बहारे नही बजर होगे।
नफरत के बीज मत बोओ।

नफरत की नजरो से मत देखो
वरना हम सब अधेरो मे खो जाएगे।
प्यार के सारे चिराग गुल हो जाएगे
आगन सिसकेंगे,
गलिया चीखेंगी।
तब गौतम, ईसा, मोहम्मद—
और नानक की वाणी सुनाई नही पडेगी
सब के सिर शैतानियत चढेगी।
नफरत की नजरो से मत देखो।

धर्मों के घेरे मत बनाओ—
और मत करो इनकी परिभाषाए।
इससे दिलो मे दरार पडती है।
बहता है खून इसान का और
लाश सडती है।
गर मजहब के रास्ते पर—
बारूद बिछाओगे तो,
सतो के चरण चिह्न मिट जायेगे।
निश्चय ही हम भटक जायेंगे।
धर्मों के घेरे मत बनाओ।

मानव हो तो मानव के गले मिलो—
और प्यार से चूमो एक दूसरे के हाथ।
स्वर्ग उतारो धरती पर रहने को एक साथ।
तो आओ—

मानवता का मकरन्द बाटो,
समता का छन्द बाटो ।
लडा तो भूख और अभावा स लडा
सबस मिला—पुष्प स खिला ।
मानव हा तो मानव स गल मिलो ।

∧

अग्निधम

प्रकाश तातेड

इतना निस्तज है
आज का सूरज
कि दिन की राशनी म
घाल गया कोई
रात की खामोशी ।

मुर्दा हा गय मरे गाव म
खून स लथपथ है
पीपल की छाव
पनघट पर कट पडे
महदी रचे पाव ।

हवा मे भरी
बारूद की तेज गध साक्षी है
कि अभी अभी यहा से
गुजरी है आग उगलती बन्दूक ।

माना कि आग उगलना
तुम्हारा धम है, बन्दूका ।

मगर गलत हाथो मे
कैसे वच पायगा
तुम्हारा अग्निधम ।

∧

शब्द साधना

सुशीला मूया

कलम के कमाल स जब तक
अपरिचित थे,

शब्दो की पनी धार स
जब तक अपरिचित थे

शिक्षा के सार स जब तक
अपरिचित थे

गतिमय ससार स तब तक
अपरिचित थ ।

पाटी और पोथी स जब तक
अपरिचित थे ।

अक्षर क मोती स जब तक
अपरिचित थ ।

ज्ञान की ज्योति से जब तक
अपरिचित थ ।

वक्त की चुनौती से तब तक
अपरिचित थे ।

शब्द की सामथ्य को
जब हमने जाना,
सरस्वती की साधना की
महत्ता को पहचाना

तब समझे हैं कि इन माटी पोथियों में
भरी है अपार दौलत,
कोई नहीं लूट सकता बिचारा,
चिन्तन मनन का यह अद्भुत खजाना।

पाटी, पाथी और कलम से
परिचय के बाद
हमने सकल्प लिया है कि
हमे साक्षरता से शिक्षा,

शिक्षा से संस्कृति
कला अध्यात्म, विज्ञान
और उन्नत तकनीकी
तक के लम्बे

किन्तु सुशृंखलाबद्ध
विकास पथ पर है बढ़ते जाना।

Λ

जब सिर से पानी गुजर जायेगा

रूपसिंह राठौड

ये—नित्य नये उभरते
तनावो का अटूट सिलसिला

दर्शाता ह—
किसी अनहोनी क आगमन का

जो—भव्य अतीत को भुलाकर
पसर जायगा धरा पर

हाथ-पैर फैलाकर
क्षितिज के "स पार स उस पार

तब—
पसरा होगा चहु ओर
अधेरा ही-अधेरा

बीत स्वर्णिम को याद कर
आसू ढलकायगा
हर-नव आग तुक सवेरा

और—
य बस्तिया—हो जायेंगी वीरान
मानव हीन श्मशान क समान

कि—जगल क ये जीव
रौंद डालेंगे—हर गाव—शहर की गलिया को

और—
छीन लग—बच्चो की किलकारिया
और अधरो की मधुर मुस्कान का

तो—
अब भी वक्त है—
समय रहत चेतन का—विषमता मेटन का

आरोप प्रत्यारोप की झडी समटने का
नही तो—छोडकर नव-जीवन की आस

भावी पीढ़िया—भोगेगी सत्रास
जब मानव का मनुष्यत्व मर जायगा
तब क्या होगा—जब सिर से पानी गुजर जायगा।

^

अहसास

कुतुबुद्दीन नद्दाफ

तरल, सिंदूरी रक्त,
आसपास उग आए
पजो के पोरो से,
शोलो सा टपकता हुआ।

नाखूनो के निशान लिये
व्यक्ति की पीठ के,
अनगिनत नकाब,
उगलियो के चेहरो पर।

एक कराह उठती है—
अहसास की कोशिशो मे, शायद
पजो पर का खून हो
किन्ही अपनो का,

लेकिन एक तीखा दर्द पसलियो के,
आसपास,
झुठला देता है सब कुछ।
शकुनि के पास हमेशा चिन।

लकिन साप की तरह
अपनी केंचुली उतार,
लौटा लता हू,
अपन जिस्म का,
तभी शायद इतनी लम्बी हैं
इतनी लम्बी है
मरी उम्र ।

Λ

भूख

सुकान्त 'सुमि'

भूख
पैदा हाती है
इन्सान के जन्म के साथ
समय के साथ साथ
फलती फूलती रहती है

बचपन
फिर जवानी
जीवन की दौड म
सबसे आगे
सबसे तेज
भागती है भूख

दिन रात
रात और दिन
मानव मशीन बन
करता रहता है काशिश

मिटाने के लिए
भूख !

काल देश और समय
हर युग में
हर पल—हर घड़ी
जोंक की तरह
बदन से
चूसती रहती है
खून

हड्डियों का गठर
पुतले-सा बदन
सुंदर रूप
यौवन की दहलीज
सुखद सपने
प्यार मोहब्बत
मान-अपमान

आबरू
ममता
नाज, शर्म, हया
चढ़ जाती है
भेंट
भूख की
चिपटी रहती है
आंतड़ियों के साथ

और
भूख को मिटाने के
सब प्रयत्नों के
बावजूद

एक दिन
निगल जाती है
इन्सान को
भूख ।।

Λ

तबदीली

गुलाम मुहम्मद "खुर्शीद"

शालाबार
है आसमां !
शोलाखेज
है जमीं !

जल गई
मुहब्बत की फसल
लहलहा रही है हर सू
वहशियाना दरिन्दगी की काश्त !

दरिन्दा बनकर
चाट रहा है
आदमी का लहू आदमी !
आफ !
कितनी तबदीली आ गई है,
आदमी की आदत में !!

नीति

भोगीलाल पाटीदार

आत्म विभोर हो
मन से विमोहित हो
करना चाहा कृत्य ऐसा
भविष्य म रहे याद जैसा।

किया गमन उस राह आर
साक्षात्कार हुआ माग छोर
कौन जा रही साहसी अकेली
कोई मानव या है पहली।

अनायास बोल निकल पडे
हृदय म दया भाव उमड पडे
तुम अकेली सुनसान राह
किसका लेना है तुम्हें थाह।

मुह खुला, स्वर निकला
सुरीला, मदुता मे गाभीय
तुम हो विद्वान् सत्यवादी
मेरा ज्वर है बडा मियादी।

तुम सत्य से नही डिग सकत हो
सद्माग नही छोड सकत हो
एक बीवी के भक्त हो
विचारा के बडे दढ़ हो।

इन सबसे रहती हू दूर
इनको समझती हू क्रूर
छल, असत्य का मेरा परिवश
पसा, परिवतन, रहना खामोश।

एक दिन
निगल जाती है
इन्सान को
भूख ।।

∧

तबदीली

गुलाम मुहम्मद "खुर्शीद"

शोलाबार
है आसमां !
शोलाखज
है जमीं !

जल गई
मुहब्बत की फसल,
लहलहा रही है हर सू
वहशियाना दरिन्दगी की काश्त !

दरिन्दा बनकर
चाट रहा है
आदमी का लहू आदमी !
आफ !
कितनी तबदीली आ गई है,
आदमी की आदत में !!

नीति

भोगीलाल पाटीदार

आत्म विभोर हो
मन से विमोहित हो
करना चाहा कृत्य ऐसा
भविष्य म रहे याद जसा।

किया गमन उस राह ओर
साक्षात्कार हुआ माग छोर
कौन जा रही साहसी अकेली
कोई मानव या है पहेली।

अनायास बोल निकल पडे
हृदय म दया भाव उमड पडे
तुम अकेली सुनसान राह
किसका लेना है तुम्हे थाह।

मुह खुला, स्वर निकला
सुरीला, मदुता मे गाभीय
तुम हो विद्वान सत्यवादी
मेरा ज्वर है बडा मियादी।

तुम सत्य से नही डिग सकत हो
सदमाग नही छोड सकत हो
एक बीवी के भक्त हो
विचारा के बडे दढ हो।

इन सबसे रहती हू दूर
इनको समझती हू क्रूर
छल, असत्य का मरा परिवेश
पैसा, परिवतन, रहना खामोश।

कहीं दामन फैलाती हू
कभी हाथ जोड़ती हू
साष्टाग प्रणाम भी करती हू
वादा म लुभाती हू।

काम निकलने पर भूल जाती हू
राज या नीति से जानी जाती हू
सुनकर चकरा जाता हू
सहसा स्मृति मे लौट आता हू

∧

यौतुकी और उत्कोची सस्कृति

मेवाराम कटारा 'पक'

देशी और विदेशी
कैक्टस जो बोये थे आगन मे
अब मेरे ही अग छेदने लगे है
अनावृत करने लगे है

कुल वधू के वसन
बेचारी पराश्रिता वल्लरी
विवश हुई/समर्पित है
इस यौतुकी सस्कृति के चरणो म

विच्छिन्न वसना निरशना
बैसाखियो पर चलती मा
आखो म साझ का सूरज चमक उठता है
यह क्या ?

मर परा का लक्या मार गया
तुम क्या हसत हो ?
अस्तु, तुम्हारा दोष नही
पीडितो का उपहास
समद्धो का परिहास वन जाता है।

अब कौन बचाय द्रौपदी की लाज
कृष्ण भी समर्पित है
उत्कोची सस्कृति के लिए
नही !

मैं वसाखियो से चलकर ही रक्षा करूगा
अरे, मेरे तो हाथो को भी
नाक पिचती चली जा रही है
वढ रहा है केवल पेट

वाणी लडखडा रही है
सत्य के अभाव मे
लगता है मुझे भी समर्पित होना पडेगा
यौतुकी और उत्काचो सस्कृति के नाम।

∧

सुहाग सिदूर

जगदीश प्रसाद मिश्रा

प्रिय !
मर माथ का सिन्दूर
तुम्हारे कर के हस्ताक्षर हैं।

सरल किरन उद्भासित
निगम है—विश्वास निहित।

कि मुझको है अधिकार
तुम्हारे पौरुष पर
जिसको देकर शक्ति भक्ति नित
अपने मन की सुन्दर तन की
मैं सृजन करूँगी नव भव का।

यह ज्योति रेख
तम की छाती पर—तुमने खींची है,
अपने कर में चुटकी भरके,
है ढीठ भरी आशा का एक डिठौना।

अथवा—सजा दिया है तुमने
भाल लालकर—अपने उर के रंग से
यह सिन्दूर सलोना

जिसको लेकर
तन की रति में मन की गति से
मैं निर्माण करूँगी
नव संस्कृति का।

रक्त रेख-सा
यह कुंकुम का दीप्त तिलक
अभिषेक किया है तुमने मेरा
कि मैं स्वामिन हूँ आज तुम्हारे—
मन सिंहासन की

जिसको लेकर रचा जायेगा
इक इतिहास नये युग का।
तुम्हारा दान महत वरदान मिला है मुझको—
जिसके बल से नष्ट करूँगी मैं दुर्भावन का
जग से अघ का।

∧

दीप

रामनाथ मंगल

दीप !
तुझे क्या मिलता है
तिल तिल कर जलने में ?

अंतिम बूंद भी
न बचाकर
जला देता है ।

जब चाहे तब
मसल कर बुझा देते हैं तुझे ।
लेकिन

तू हमेशा
जलता हुआ मुस्कराता रहा
आखिर तुझे मिलता रहा

'भटके लोगों का राह बताने में
जीवन सफल हो जाता है मेरा ।

जीवन ध्येय बन गया है मेरा
परोपकार में जलकर भी मुस्कराते रहना ।"

लेकिन
अंधेरा तो मौजूद है
तेरे तले के नीचे

इसे तो दूर कर लिया होता
परोपकार करने से पहले ।
"ये तो एक प्रतीक है

उस अंधकार के लिये
जो मेरे बुझाने वाले को
समेट लेगा मेरे बुझ जाने के बाद।'

∧

समय-सत्य

श्याम 'निर्मोही'

एक दीप यदि जले सत्य का
तो यह देश चमन हो जाये।

कैसे हम आजाद मुल्क में,
जाने का अरमान सजोयें?

कैसे हम गांधी गौत्तम के
सपनों को विश्वास दिलायें?

हाहाकार विषमताओं से
भारत माता बिलख रही है।

आज देश की तरुणाई भी
मय खाना में सिसक रही है

अवमूल्यन अब है चरित्र का,
कैसे नैतिक शिक्षा लायें?

चमन उजड़ता देख-देख कर,
आंखों में आंसू आ जायें,

एक दीप यदि जले सत्य का,
तो यह दश चमन हो जाये।

आओ तीथ-तीथ पर वठे
हसा का आवाज लगाय।

गगा की सौगध हमे है,
और कसम अपनी माटी की।

मुझे, बताओ शत्रु दश का,
किस आश्रम म छिपा हुआ है?

मुझे बताओ, कहा छिप है,
दश भक्ति क उज्जवल चहरे?

शापण की दीवार खडी है,
चारा ओर जहा तक जायें

युक्ति सुझाओ कहा-कहा तक,
भारत का अस्तित्व बचायें?

एक दीप यदि जले सत्य का
तो यह दश चमन हा जाय,

Λ

ख्वाब

विद्या पालीवाल

ख्वाब
बादल से बनने

पहाड़ों पर छलत
उछलत
मचलते ही चल दिये।

आई एसी लहर
उठा कसा भवर ?

सजल सजल
नयन चचल
धार अविरल

बह रही प्रतिपल
सीचत पल पल धरा का
थिरक थिरक्त चल दिय ॥
ख्वाब बादल से

बनना मिटना
मिट कर बनना
सुन्दर सपना
शाश्वत अपना

क्रम क्रम करत।
अविरल बहत ॥
छप छप करती
हर सिहरन मे

य भाव भरत चल दिय ॥
ख्वाब बादल स

ख्वाब आत रहे
ख्वाब जात रहे
ख्वाबा म ही जीवन बितात रह

ले मन की तपन
जग की उलझन
क्षण-क्षण जग क्रम म घाल घाल
मधु कण लुटात चल दिय ।।

ख्वाव
बादल से बनत
पहाड़ा पर ढलत
उछलत
मचलत ही चल दिय ।।

Λ

सम्पर्क सूत्र

—सावित्री परमार, पालीवाल भवन, खजान वालो का रास्ता, चादपोल, जयपुर
—भगवती लाल व्यास, 35, फतहपुरा, खारोल कॉनोनी, उदयपुर
—चन्द्रमोहन हाडा 'हिमकर', म० न० 80 17 गुलराज क्वाटस 3, नसीराबाद रोड, पारसी मन्दिर के पीछे, अजमेर (राज०)
—रामस्वरूप परश, पीरामल उच्च माध्यमिक विद्यालय, बगड-333023, झुझुनू
—त्रिलोक गोयल, अग्रसेन नगर, अजमेर (राज०)
—गोपाल प्रसाद मुदगल वरिष्ठ उप जिला शिक्षा अधिकारी, जिला परिषद धौलपुर
—पुष्पलता कश्यप, प्र० अ०, रा० प्रा० बा० विद्या० उदयमन्दिर (आसन) जोधपुर
—नवनीत कुमार व्यास, व्याख्याता, राज० उच्च० माध्य० विद्या० सावला (डूगरपुर)
—सगीर "शाद', अध्या० रा० प्रा० विद्या० थडछवडा (कोटा)
—कैलाश चन्द्र शर्मा, व्या० रा० उ० मा० विद्या० बीगोद (भीलवाडा)
—विष्णु लाल जोशी, प्र० अ० प्रा० विद्या० वल्लभनगर (उदयपुर)
—ज्ञान प्रकाश पीयूस, व्या० रा० उ० विद्या०, रायसिंह नगर (श्रीगगानगर)
—कमर मेवाडी, चाद पोल, काकरोली (राज०)
—रामगोपाल "राही', प्रधा०, रा० उ० प्रा० विद्या० पापडी (बूदी)
—वासुदेव चतुर्वेदी, एस० आइ० ई० आर० टी०, उदयपुर
—अरविंद भूम्वी, व्या० रा० उ० मा० विद्या०, रतननगर (चूरु)
—ओम पुरोहित "कागद", 24 दुर्गा कॉलोनी, हनुमानगढ सगम 335512
—ब्रजभूषण भट्ट, प्र० अ० ,रा० मा० विद्या०, तारागढ (अजमर)
—नन्द किशोर चतुर्वेदी, प्र० अ०, रा० उ० प्रा० विद्या०, ठुकराई (चित्तौडगढ)

—शिव मृदुल, बी० 8, मीरानगर, चित्तौडगढ (राज०)

—श्रीमती सीमा पवार, रा० प्रा० बा० विद्या० नया बास, शिव मंदिर चूरु

—अरविन्द निवारी, रा० मा० विद्या०, बामनी (नागौर) 341021

—प्रीनर्मसिंह परमार, स० अ०, रा० प्रा० विद्या०, खीमेल वाया रानी

—श्रीमती चमेली मिश्र, प्रधानाध्यापिका, रा० बा० मा० विद्या० सादः

—रामनिवास लुवाडिया, राज० उ० मा० विद्या० निम्बाहेडा (चित्तौडग

—मणि बावरा, रा० नगर उ० मा० वि०, वासवाडा

—रफीक अहमद समानी, व० अ०, राज० उ० मा० विद्या०, कुचामनसिटे

—जगदीश सुदामा, श्री कृष्ण निकुज, भट्टियानी चोहट्टा, उदयपुर

—भगवती प्रसाद गौतम, 1 त० 8 "अजलि" दादाबाडी, काटा (राज०)

—मिश्री लाल एम० ओझा "विश्वास", प्र० अ०रा० उ० प्रा० विद्या० बाया रोहिडा जिला सिरोही

—श्याम सुन्दर भारती, फतह सागर, जोधपुर

—अब्दुल मलिक खान, रामनगर, भवानी मडी-326502 (झालावाड)

—नटवर पारीक 'विद्यार्थी', सचालक श्री शारदा ज्ञानपीठ, डीडवाना (न

—रामनिरजन शर्मा 'ठिमाऊ' साबु हायर सेकण्डरी स्कूल, पिलानी (झुझु

—चैन राम शर्मा, ग्रा० प० चन्देमरा वाया खेमली (उदयपुर)

—टी० एस० राव राजस्थानी", पुस्तकालयाध्यक्ष राज० सावजनिक त पुस्तकालय, प्रतापगढ 312605 (चित्तौडगढ)

—मध्या किरण मोहिल, दयानन्द बाल मन्दिर, रथखाना बीकानेर

—सावर दइया, 3 च० 14 पवनपुरी, बीकानेर

—नेनाराम टाक, नयापुरा, तालाब की बारी, सोजटसिटी (पाली)

—सगीता या, बीकानेर चिल्डन स्कूल, राज० मुद्रणालय के सामन बीकानेर

—अमतसिंह पवार, राज० उ० प्रा० विद्या० महिला बाग, जोधपुर

—अहमद रशीद मसूरी, रा० उ० प्रा० विद्या०, धानक्या (जयपुर)

—त्रिलोक शर्मा राज० उ० प्रा० विद्या० देपूला (अलवर)

—पुष्पा तिवाडी, अध्या० C/o श्री भवर लाल तिवाडी, अरविन्द सदन, राधाकृष्णन नगर, भीलवाडा 311001

—कुन्दन सिंह सजल, उदय निवास रायपुर (पाटन) (सीकर)

—गुलाम मोहियुद्दीन माहिर, अध्या० रा० सा० उ० मा० विद्या०, बीकानर
—सलीम खा "फरीद' पत्रालय हुसामपुर जनपद सीकर-38240
—ओमप्रकाश सारस्वत व्याख्याता राज० उ० मा० विद्या० अनूपगढ (गगानगर)
—जनक राज पारीक प्रधानाचाय, ज्ञान ज्योति उ० मा० विद्या० श्री करनपुर (राज०)
—हरिओम कुमार शमा, रसीदपुर वाया महुवा (सवाई माधोपुर)
—कैलाश मनहर अध्या० रा० मा०विद्या० खोरा लाडरवानी मनोहरपुर(जयपुर)
—पुष्पा रघु प्र० अ०, पी० बा० उ० मा० वि० बगड झुंझुनू)
—प्रेम प्रकाश व्यास व्या० राज० उ० मा० विद्या० बालोतरा
—गिरवर प्रसाद बिस्सा ब० अ० राज० उ० मा० विद्या० अनूपगढ(श्री गगानगर)
—योगेन्द्र सिह भाटी "योगी प्र० उ० राज० मा० विद्या० फलवा (चितौडगढ)
—हरिश्चन्द्र सेन, व्या० राज० उ० मा० विद्या० मुबारिकपुर (अलवर)
—भागीरथ भागव, 88 आयनगर, अलवर (राज०)
—बुलाकी दास "बावरा' बावरा निवास, धोबीधोरा, सूरसागर के पास, बीकानेर
—नारायण कृष्ण ' अकेला प्र० उ० राज० मा० वि० भटियानी चौहट्टा (उदयपुर)
—जगदीश प्रसाद आचाय, व्या० राज० उ० मा० विद्या० मडता रोड (नागौर)
—रघुनाथ वतरा, गाविन्दनगर, दिल्ली रोड, अलवर (राज०)
—रत्न कुमार शास्त्री "रत्न" 398 ध्रुव माग, तिलकनगर, जयपुर
—व्रजभूषण चतुर्वेदी ' वृजेश' , रा० उ० प्रा० विद्या० मूडला बिसोती वाया बारा कोटा 325205
—शारदा कुमारी भटनागर, व्या० रा० शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालय (महिला) बीकानर
—जगदीश सैन अध्या० राज० उ० प्रा० विद्या डीडवाना पो० वारडी वाया देवगढ महारिया (उदयपुर)
—पूर्णिमा शर्मा सहा निरीक्षक, एस० आई० ई० आर० टी०, उदयपुर
—रमन गुप्त व्या० ज्ञान ज्याति उ० मा० विद्या० श्री करनपुर
—रमश चन्द्र उपाध्याय, प्र० अ० राज० उ० मा० विद्या० परतापुर (बांसवाडा)
—अरनी रावट स म० प्र० अ० राज० उ० मा० विद्या० सीसवाली (कोटा)
—मोहन लाल जोशी, रा० म० गांधी उ० मा० विद्या०, जोधपुर

—जितेन्द्र श्री गो० जैन उ० मा० विद्या० छोटी सादडी 312604
—भूपेन्द्र तनिक, 12/59 सिगवाव, बासवाडा 32700 ।
—रामनिवास सोनी, वाली जी का चौक, डीडवाना
—रमेश कुमार वर्मा, अध्या० 226 कृष्ण पुरा (उदयपुर)
—श्रीमाली श्री वल्लभ घोष, सुग ध गली, ब्रह्मपुरी, जोधपुर
—दीपचन्द सुथार अ० रा० उ० प्रा० विद्या० न० 1 मेडताशहर ना
—वासु आचार्य, अध्या० बाहेती चौक, बीकानेर
—कैलाश चतुर्वेदी, हाईस्कूल रोड, भवानी मंडी
—जितेन्द्र शकर बजाड, शिक्षक P/o भीचोर (चित्तौडगढ)
—सीताराम राहगीर, राज० उ० मा० विद्या० बालातरा (बाडमेर)
—वीरेन्द्र कपूर म० न० 755, सिन्धी कालोनी, आदर्श नगर जयपुर
—डॉ० सरला गुप्ता "भूपेन्द्र" अध्या० एस० पी० आर० सहरिया विद्या० कालाडेरा (जयपुर)
—श्रीमती अजना भटनागर व० अ० रा० बा० मा० विद्या० चौमहल्ला झालावाड)
—ईश्वर लाल गारू "दर्शक" प्र० उ० रा० उ० मा० विद्या० बीगोद (
—प्रकाश सातेड व्या०, रा० उ० मा० विद्या० आमट (उदयपुर)
—कुमारी सुशीला मूथा, C/o हिमालय प्रिंटस, कुम्हारिया कुआ, जोधपु
—रूपसिंह राठौड, ग्राम पोस्ट बास घासीराम वाया अलसीसर जिला झु
—कुतुबुद्दीन, प्र/अ० रा० मा० विद्यालय, दानपुर कोड (सवाईमाधोपुर)
—मुकान्त सुमि व्या० पोस्ट करनपुर 335073
—गुलाम मोहम्मद खुर्शीद, अध्यापक नकास गेट के अन्दर, नागौर
—भोगीलाल पाटीदार, व० अ० राज० उ० मा० विद्यालय बनकोडा (डूग
—मेवाराम कटारा व्या० लाल दरवाजा बयाना (भरतपुर)
—जगदीश प्रसाद मिश्रा, प्रिंसिपल राज० उ० मा० विद्यालय सीसवाली (
—रामनाथ मगल व० अ० रा० बालिका माध्यमिक विद्यालय सादडी (पा
—श्याम निर्मोही व० अ० रा० मा० विद्यालय कैलाशपुरी उदयपुर
—विद्या पालीवाल, F/38 पाला ग्राउण्ड उदयपुर (राजस्थान)

शिक्षक दिवस प्रकाशनो की सूची

वप 1967से1९73 तक इस योजना के अ तगत 31 सकलन प्रकाशित किय गये हैं। ये 31 प्रकाशन शिक्षा निदेशालय के प्रकाशन अनुभाग ने सम्पादित किये थे। 1974 से सक्लनो का सम्पादन भारतीय त्याति के लेखको से करवाया गया। बाद के सम्पूर्ण सक्लना का विवरण इस प्रकार है—

1974 'रोशनी बाट दो' (कविता) स० रामदेव आचाय, 'अपन आस-पास, (कहानी) स० मणि मधुकर, रग रग बहुरग' (एकाकी) स० डॉ० राजा नद, 'आधी अर आस्था व भगवान महावीर (दो राजस्थानी उप यास) स०यादवे द्र शर्मा 'च द्र' 'बारखडी'(राजस्थानी विविधा)स०वेद व्यास।

1975 'अपने से बाहर अपने म,' (कविता) स० मगल सक्सेना 'एक और अन्तरिक्ष' (कहानी) स०डा० नवलकिशोर, 'सभाळ'(राजस्थानी कहानी) स० विजयदान देथा, स्वग भ्रष्ट' (उप यास) ले०भगवती प्रसाद व्यास, स० डॉ० रामदरश मिश्र विविधा' स० राजे द्र शर्मा।

1976 'इस बार' (कविता) स० न द चतुर्वेदी, सक्ल्प स्वरो के' (कविता) स० हरीश भादानी 'बरगद की छाया' (कहानी) स० डा० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, 'चेहरा के बीच' (कहानी व नाटक) स० योग द्र किसलय 'माध्यम' (विविध) स० विश्वनाथ सचदेव।

1977 'सृजन के आयाम' (निब ध) स० डा० देवी प्रसाद गुप्त, 'क्यो' (कहानी व लघु उप यास) स० श्रवणकुमार चेत रा चितराम (राजस्थानी विविधा) स० डा० नारायणसिंह भाटी, समय के सदभ (कविता) स० जुगम दिर तायल 'रग वितान' (नाटक) स० सुधा राजहस।

1978 'अधेरे के नाम सधि पत्र नही' (कहानी सकलन) स० हिमाशु जोशी 'लखाण' (राजस्थानी विविधा) स० रावत सारस्वत, 'रचेगा सगीत' (कविता सकलन) स० न दकिशोर आचाय, 'दो गाव (उप यस) लेखक मुबारक खान आजाद स० डॉ० आदश सक्सेना, 'अभिव्यक्ति की तलाश' (निब ध) स० डॉ० रामगोपाल गोयल।

1979 'एक कदम आग' (कहानी सकलन) स०ममता कालिया 'लगभग जीवन' (कविता सक्लन) स०लीलाधर जगूडी, जीवन यात्रा का कोलाज/ न० ? हि दी विविधा) स० डा० जगदीश जोशी, कारणी क्लम री, (राजस्थानी / (विविधा)स० अ नाराम सुदामा 'यह किताब बच्चा की (बा न साहित्य) स० डा० हरिकृष्ण देवसरे।

1980 'पानी की लकीर (कविता सक्लन) स० अमृता प्रीतम, 'प्रयास'

(कहानी सकलन) स० शिवानी, 'मजूषा' (हिन्दी विविधा) स० राकेश जैन, 'अतस रा आखर' (राजस्थानी विविधा) स० नसिंह राजपुरोहित, खिलते रहे गुलाब'(बाल साहित्य) स० जयप्रकाश भारती।

1981 'अधेरा का हिसाब (कविता सकलन)स० सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, 'अपन से परे' (कहानी सकलन) स० मन्नू भण्डारी 'एक दुनिया बच्चा की (बाल साहित्य) स० पुष्पा भारती 'सिरजण' (राजस्थानी विविधा) स० तेजसिंह जोधा व द मातरम् (हिन्दी विविधा) स० विवेकी राय।

1982 धमक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे'(कहानी सकलन) स० मणाल पाण्डे कौमी एकता की तलाश और अन्य रचनाए' (हिन्दी विविधा) स० शिवरतन थानवी 'अपना-अपना आकाश' (कविता सकलन) स० जगदीश चतुर्वेदी, 'कूपळ' (राजस्थानी विविधा) स० कल्याण सिंह शेखावत, फूला के य रग' (बाल साहित्य) लक्ष्मीचन्द्र गुप्त।

1983 भीतर बाहर (कहानी सकलन) स० मृदुल गग, 'रेती के दिन रात' (हिन्दी विविधा) स० प्रभाकर माचवे घायल मुट्ठी का दद' (कविता सकलन) स० डा० प्रकाश आतुर 'पाखुरिया माटी की' (बाल साहित्य) स० कन्हैयालाल नन्दन हिवड रा उजास (राजस्थानी विविधा) स० श्रीलाल नथमल जोशी।

1984 'अपना अपना दामन (कहानी सकलन) स० मजुल भगत, 'वस्तुस्थिति (कविता सकलन) स० गिरधर राठी सचयनिका (विविधा) स० याज्ञवल्क्य गुप्त फूल मारू पाखडी (राजस्थानी)स० शक्तिदान कविया 'सारे फूल तुम्हारे हैं' (बाल साहित्य) स० स्नेह अग्रवाल।

1985 'रास्ते अपने अपने (कहानी सग्रह) स० राजेन्द्र अवस्थी सुनो ओ नदी रेत की (कविता सग्रह) स० बलदव वशी, 'बबूल की महक' (बाल साहित्य) स० मस्तराम कपूर 'मरु अचल के फूल (हिन्दी विविधा) स० कमल किशोर गोयनका, 'माणक चोक राजस्थानी (विविधा) स० मनोहर शर्मा।

1986 'ढाई अक्खर' (कहानी सग्रह) स० आलमशाह खान, 'रेत का घर (कविता सग्रह) स० प्रकाश जैन, रेत के रतन (बाल साहित्य) स० मनोहर प्रभाकर, 'रेत रा हेत (राजस्थानी विविधा) स० हीरालाल माहेश्वरी, बूद-बूद स्याही (हिन्दी विविधा) स०पुरुषोत्तमलाल तिवारी।

1987 'बीच का आदमी तथा अन्य कहानिया (कहानी सग्रह) स० शानी, 'निर्निमेष,'(कविता सग्रह) स० मेघराज मुकुल, 'मोतिया का थाल (बाल साहित्य) स० मनोहर वर्मा, माटी की सुवास (हिन्दी विविधा) स० सावित्री डागा 'सिरजण री सौरभ (राजस्थानी विविधा) स० नन्द भारद्वाज।

10481